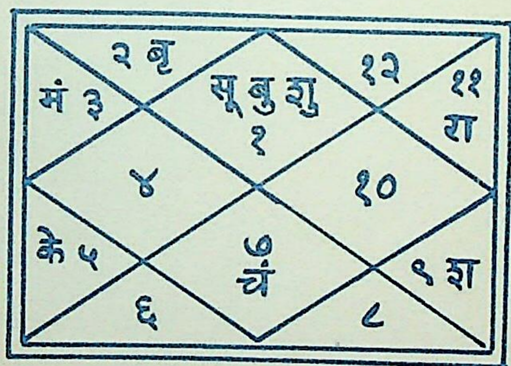
हायनभास्कर



श्रीमत्स्यदेशान्तर्गत श्रीमद्बाणगंगातटस्थधौलाख्यग्रामलब्धजनि संप्रतिजयपुरवास्तव्यपण्डितलक्ष्मीनारायणशर्म्मणा विरचितः

॥ श्रीः ॥

हायनभास्करः

जयपुरमहाराजाश्रितश्रीमद्गुर्ज्जरगौडविप्रवंशोद्भवश्रीमद्रामचंद्र-सूरिसूनुपण्डितदुर्गाप्रसादशर्म्मविरचितहिन्दीटीकया समेतः

गङ्गाविष्णु-श्रीकृष्णदास, कल्याण-प्रकाशन

संस्करण १९८७

© प्रकाशक

सूची मूल्य ७ रुपयें मात्र

मुद्रक व प्रकाशक :
मेसर्स खेमराज श्रीकृष्णदास,
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
वम्बई–४०,०००४ के लिए
दे. स. शर्मा मैनेजर द्वारा
श्रीवेंकटेश्वर प्रेस, खेतवाड़ी, वम्बई ४ में मुद्रित.

श्रीगणेशाय नमः

अथ

हायनभास्करग्रंथस्थविषयानुक्रमणिका

इति विषयानुक्रमणिका समाप्ता

भूमिका



प्रिय वाचकवृन्द ! आज कल अधिकतर ज्योतिषशास्त्रके अनेकानेक ग्रंथ प्रतिवर्ष छपकर प्रकाशित होते हैं। परंतु ऐसा कोई भी ग्रंथ ताजिक-विषयका आजतक प्रकाश नहीं हुआ जिसके द्वारा संपूर्ण वर्ष बनानेकी प्रक्रिया एवं फलादेश लिखा हो। अत एव इसी अभाव को दूर करनेके अर्थ हमने इस अलौकिक 'हायनभास्कर' नामक ग्रंथको हिन्दीटीकासहित तैयार किया है, यह ग्रंथ अपने नामके अनुसार सत्यही सब ज्योतिषियोंको इस संसारमें सूर्यवत् प्रकाशित करनेवाला है, क्योंकि इस ग्रंथको हमारे परम मित्रवर श्रीमद्‌वाणगंगातटस्थ धौलाख्यग्रामलब्धजनि संप्रति जयपुरवासनव्य पण्डित लक्ष्मीनारायण शर्म्माजीने बहुत परिश्रमसे बनाया है ! इस ग्रंथमें सब विषय प्राचीन महर्षियोंके ग्रंथोंसेही लिखे हैं, यह वर्ष बनानेका लघु ग्रंथ हमारे स्वजातीय भूदेवमात्रको परमोपयोगी होगा । अंतमें विद्वज्जनोंसे प्रार्थना है इस ग्रंथके बनानेमें हमारे मित्रवरको कितना मानसिक परिश्रम हुआ होगा जिसको विद्वान् लोगही जान सकते हैं, किंतु एकचक्षुवाले पुंश्च-लीपुत्र मूर्ख अगर इसकी निन्दाभी करे तो कुछ क्षति नहीं।

सत्य तो यह है कि जिन महाशयोंको ग्रंथ बनानेका काम है वह जानते हैं 'नहि वंध्या विजानाति गुर्वी प्रसववेदनाम्' जैसे स्त्रीके पुत्रप्रसवकी पीडाको वंध्या स्त्री क्या जाने । तैसेही जिनको काला अक्षर भैंस बराबर है वह शास्त्रके मर्मको क्या जान सकते हैं।

परंतु साथही यह भी कहे बिना नहीं रहा जाता कि बहुतसे दुष्ट जो दूसरेके उत्कर्षको सहन नहीं कर सकते वह 'सुंदरमणिमयभवने पश्यति छिद्रं पिपीलिका सततम्' इस पद्यके अनुसार इसकी कांटछांट करनेको कटिबद्ध बैठेही होंगे उन ग्रामसिंहोंसे हम थोड़ेही डरनेवाले हैं । यद्यपि इस ग्रंथको सर्वसत्वाधिकारसहित श्रीयुत **सेठ गंगाविष्णु श्रीकृष्णदासजी लक्ष्मी-वेंकटेश्वर** प्रेसके स्वामीको प्रदान कर दिया है. तथापि 'काकः सर्वरसान्भुक्त्वा

विनामेध्यं न तृप्यति' इस पदको चरितार्थ करनेवाले दुष्ट जन हैं वह अपनी कार्रवाई अवश्यही करेंगे. जैसे उक्त मित्रवरके बनाये हुए माहेश्वरीय तंत्रकी कांटछांट करके नारायणमुकंदरामने अपनी पण्डिताईका पूर्ण परिचय देनेको 'माहेश्वरतंत्र' नामक पुस्तक रचके मुंबईके ज्ञानसागर प्रेसमें छपाकर प्रकाश करा दी।

इस लिये सुज्ञ पुरुषोंसे हम अनुरोध करते हैं कि ऐसे दुष्कृत्य काम न करें यदि बनानेकी इच्छा हो तो नवीन ग्रंथ बनाओ और उत्तम नाम-संस्कार करो न कि मात्रा अक्षरादि न्यूनाधिक करके उसीके सदृश रखो. जैसे कि माहेश्वरीयतंत्रकी जगह माहेश्वरतंत्र तथा रसराजमहोदधिकी जगह रसराजमहोदय ऐसा नाम रखनेसे कुछ प्रतिष्ठा नहीं होती। लघुचित्तके पुरुष दूसरोंकी उन्नति देख करके उनके बराबर होनेकी सामर्थ्य न होवे तब उनके ग्रंथोंके नामोंकी अदलबदल करके अपनी उदरदरी भरनेका प्रयत्न करते रहते हैं। देखें उक्त मित्रवरके बनाये हुए 'रसेंद्रभास्कर, भविष्यफल-भास्कर, हायनभास्कर' आदि ग्रंथोंकी भी काटछांट करके कुछ करेंगेही, धिक्कार है। अंतमें विद्वज्जनोंसे प्रार्थना है कि इसमें कहीं अनुचित लिखा गया हो तो बालबुद्धि जानकर क्षमा करेंगे ज्योतिषियोंसे निवेदन है कि इस पुस्तकद्वारा अपना कार्य्य करें और ग्रंथकारके परिश्रमको सफल करें इति शिवम्।

जयपुरमहाराजाश्रित-विद्वज्जनकृपापात्र,
दुर्गाप्रसाद शर्मा-
नाटानी रोड-जयपुर.

श्रीशिवः शरणम्

हायनभास्करः

हिन्दीटीकासमेतः

—★—

मङ्गलम्

नत्वा साम्बसदाशिवस्य चरणांभोजद्वयं भक्तितः ।
श्रीमद्रामकुमारनामकपितुश्चानम्य पादाम्बुजम् ।।
नानाग्रंथमतं विलोक्य सुधिया संक्षिप्तमत्युत्तमं ।
कुर्वे हायनभास्करं स्फुटतरंलक्ष्म्यादिनारायणः ।।१।।

टीकाकारमङ्गलम्

नमस्कृत्य जगन्नाथं पार्वतीवल्लभं शिवम् ।
वर्षभास्करग्रंथस्य भाषाटीका विरच्यते ।।१।।

श्रीमान् भगवान् पार्वती परमेश्वरके दोनों चरणकमलोंको भक्तिसे नमस्कार करके तथा श्रीमान् श्रौतस्मार्त्तधर्म्मपरायण पूज्यपाद श्रीरामकुमार-नामक पिताजीके चरण कमलोंको प्रणाम करिके ज्योतिषके अनेकानेक ग्रंथ और नाना ग्रंथकारोंके मतोंको अच्छी तरह देखकर स्पष्ट अर्थ है जिसमें ऐसा संक्षिप्त और अति उत्तम 'हायनभास्कर' नामक ग्रंथको मैं लक्ष्मी-नारायण करता हूं ।।१।।

अथ वर्षानयनप्रकारः

इष्टः शको जन्मशकेन हीनस्त्रिधा सपादो दलितश्च सार्द्धः ।
युक्तस्तथा जन्मगवासराद्यैः स्फुटो भवेदब्दनिवेशवेला ।।२।।

वर्त्तमानशकमें जन्मकालिक शकको घटानेसे गतवर्ष निकल आते हैं उन गतवर्षोंको तीन जगह स्थापित करे, पहिले सवाये करे फिर आधे और अंतमें डेढगुणा करे इस प्रकार करनेसे क्रमसे दिन, घटी, पल आदि निकल

आते हैं फिर इनमें जन्मकालके वार इष्टघटी पल आदि जोडकर ऊपरके अंकमें ७ सातका भाग देनेसे अवशिष्ट वर्षारंभके वार घटी पल होते हैं ।।२।।

उदाहरण संवत् १९२३ शके १७८८ तत्र पौषशुक्लनवमी चंद्रवासरे घटच: ४९।६ अश्विनीभे १८।१९ दिनप्रमाणम् २७।३० श्रीसूर्योदयादिष्ट-घटच: ५५।४ मकरार्कगतांशा: २ एतत्समये धनुलग्नोदये पं० लक्ष्मीनारायणस्य जन्माभूत् जैसे वर्त्तमान शक १८३२ में जन्मशक १७८८ को घटाया तो ४४ बचे यह गतवर्ष हुये। इनको तीन जगह रखकर पहिले सवाये किये तो पचपन ५५ हुये, दूसरी जगहमें आधे करनेसे बाईस २२ और तीसरी जगहमें डेढगुणा करनेसे ६६ छियासठ हुये क्रमसे यह दिन, घटी और पल हुये, इनमें जन्मके वार २ इष्टघटी ५५ पल ४ जोडनेसे २।१८।१० हुये, यही क्रमसे भावी वर्षके वार इष्टघटी पल हुये। अब माघकृष्ण २ द्वितीया चंद्रवारको सूर्योदयसे १८।१० इष्टकाल में ४५ पैंतालीसवाँ वर्षप्रवेश हुवा ।।२।।

अथ धनर्णचालनप्रकार:

स्वेष्टवाराद्यदा पत्रावधिश्चाग्रिमगो यदि ।
तदा पत्रावधौ न्यूनमृणं चालनकं भवेत् ।।३।।
पत्रावधि: पृष्ठगश्चेत्स्वेष्टे न्यूनं तु कारयेत् ।
चालनं धनसंज्ञं स्यात्स्पष्टस्तच्चालितो ग्रह: ।।४।।

जो अपने अभीष्ट वारसे पंचागकी अवधि आगे होय तो इष्टकालके वारादि को पंचांगके वारघटचादिमें घटा देनेसे ऋण चालन होता है। जो अभीष्ट वारसे पंचांगकी अवधि पीछे होय तो इष्टकालमें न्यून करै अर्थात् घटादेवे तो धनसंज्ञक चालन होता है ।।३।।४।।

अथ ग्रहानयनम्

धनर्णवारादिकचालनेन भुक्तिग्रहाणां गुणिता खतर्कै: ।
हृता प्रयोज्यं खलु शोधनीयं भागादिक: स्पष्टखगो यदाप्तम् ।।५।।

पूर्व लाये हुये धन ऋण चालनसे चंद्रमाको छोडकर सब ग्रहोंकी स्पष्ट पंचांगमें स्थितगतिको गोमूत्रिकाकी विधिसे गुणा करके उसमें साठ ६० का भाग देवे जो अंशादि लब्ध मिले उन्हें पंचांगके उसी ग्रहमें जोडे अथवा घटा देवे जिसकी गतिसे गुणा किया गया हो अर्थात् धन चालन हो तो जोड देवे ऋण हो तो घटा देवे तब स्पष्ट ग्रह होवेगा ।।५।।

अथ ग्रहेषु विशेषकर्म

यदा खेटो भवेन्मार्गी पूर्वोक्तं बुध आचरेत् ।
वक्रत्वे विपरीतं स्याद्राहुकेत्वोः सदाऽन्यथा ॥६॥

जो ग्रह मार्गी होय तो बुद्धिमान् पूर्वोक्त प्रकारसे जोड देवे या घटादेवे और जो ग्रह वक्री होय तो विपरीत करना चाहिये अर्थात् जहाँ जोडना हो वहाँ घटादेवे और जहाँ घटाना हो वहाँ जोड देवे परंतु राहु केतुका योग वियोग करना सर्वदा उलटाही करना चाहिये ॥६॥

अथ भयातभभोगप्रकारः

गतर्क्षघट्यो वियदङ्गशुद्धा द्विष्ठा युतास्तिग्मकरोदयाद्वै ।
इष्टासु नाडीषु भयातसंज्ञा स्वधिष्ण्ययुक्ताश्च भवेद्भभोगः ॥७॥

बीते हुये नक्षत्रकी घटी आदिको साठ ६० में घटाकर दो जगह राखे । एक जगह वर्तमान इष्ट घटी आदि जोडनेसे भयात निकल आता है । दूसरी जगह वर्त्तमान नक्षत्रकी घटी पल जोड देवे तो भभोग होता है ॥७॥

अथ चंद्रस्पष्टप्रकारः

नक्षत्रयातं खरसैर्विनिघ्नं भोगेन भक्तं यदवाप्तमेवम् ।
षष्टिघ्नधिष्ण्येषुण्युतं दशघ्नं बाणाब्धिभक्तं हि शशी स्फुटः स्यात् ॥८॥

भयातको साठ ६० से गुणाकर भभोगसे भाग देकर जो लब्ध मिले उसे अश्विनीसे लेकर वर्त्तमान नक्षत्रतक जितनी संख्या हो उसे साठ ६० से गुणाकर पूर्वोक्त लब्धिमें जोडदेवे और फिर उसको दशसे गुणाकर पैंतालीस ४५ का भाग देनेसे जो अंशादिक हो सो स्पष्ट चंद्रमा होता है ॥८॥

अथ चंद्रगत्यानयनप्रकारः

वियत्खाभ्रखनागाष्टनेत्रसंख्याविभाजिता ।
सर्वर्णितभभोगेन स्पष्टा चंद्रगतिर्भवेत् ॥९॥

अट्ठाईस लाख अस्सी हजार २८८०००० में सवर्णित भभोगका भाग देनेसे चंद्रमाकी स्पष्टगति कलादिक होती है ॥९॥

अथ पूर्वनतपरनतप्रकारः

पूर्वं नतं स्याद्दिनरात्रिखंण्डं दिवानिशोरिष्टघटीविहीनम् ।
नाडी यदीष्टा न विशुद्धिमेति तदा पराख्यं नतमामनंति ॥१०॥

दिनार्ध और रात्र्यर्ध घडी पलोंमें अपना दिन या रात्रिसंबंधी इष्टकाल (घडी पल) घटजावे तो दिन या रात्रिमें पूर्वनत होता है। और जो इष्ट-कालकी घडी पल न घटे तो परनत मानते हैं अर्थात् जो दिनार्ध या रात्र्यर्ध इष्ट कालहीमें घटजावे तो पूर्ववत् नत होता है ॥१०॥

अथ अयनांशप्रकारः

शाको वेदाब्धिवेदोनः षष्टिभक्तोऽयनांशकाः ।
देयास्ते तु रवौ स्पष्टे चरलग्नादिसिद्धये ॥११॥

वर्तमान शकमें ४४४ चार सौ चंवालीस घटानेसे जो शेष बचे उसमें साठ ६० का भाग देने पर चर, स्थिर, द्विस्वभाव लग्नोंकी सिद्धिके लिये उन अयनांशोंकी स्पष्ट सूर्यके अंश और कला विकलाओंमें मिलानेसे सायन सूर्य स्पष्ट हो जाता है ॥११॥

अथ प्रथम लग्नसाधनप्रकारः

खाग्न्युद्धृताद्युद्भवतीह लब्धं भुक्तं च भोग्यं खलु तद्विशोध्यम् ।
इष्टात्स्वकीयाच्च गतागतानां मानानि शोध्यानि तु भोदयानाम्॥१२।
शेषं खरामैर्गुणितं विभक्तं लवादिकं लब्धमशुद्धभेन । अशुद्ध-
शुद्धैर्भवनैरजाद्यैर्हीनं युतं तद्व्ययनांशमङ्गम् ॥ १३ ॥

तात्कालिक सूर्यमें पूर्वानीत अयनांको जोडे और फिर उस सूर्यके भुक्त या योग्यसे स्वोदय राशिके मानको गुणा करे और सर्वांकमें तीस ३० का भाग देनेसे जो कुछ युक्त या भोग्य आवे उसे अपने इष्टकालकी घडियोंमें घटा देवे तदनन्तर भुक्त या भोग्य राशियोंके मान घटाता जावे (जो भुक्तांश क्रिया की होय तो भुक्त राशियोंका मान और जो भोग्यांश क्रिया की होय तो भोग्य राशियोंका मान घटावे) अंतमें जब अगली राशिका मान न घटे तो उसे शेष समझकर तीस ३० से गुणाकर अशुद्ध (जिस राशिका मान नहीं घटा है) उस राशिका उसमें भाग देनेसे जो अंशादिक लब्ध हों उन्हें मेषादि गणनासे अशुद्ध या शुद्ध राशियोंकी संख्यामें घटावें या जोड देवे अर्थात् भुक्तांश क्रियामें मेषादिक गणनासे अशुद्ध राशितककी संख्यामें घटा देवे और जो भोग्यांश क्रिया की हो तो मेषादिक गणनासे शुद्ध राशितककी संख्यामें जोड देवे और फिर उस योग या वियोगमें अयनांश घटा देवे तो शेष अभीष्ट लग्न हो

जाती है। और जो रात्रिका इष्टकाल होय तो अयनांश सहित सूर्यमें छः ६ राशि जोडकर पूर्वोक्त क्रियासे लग्नका साधन करे ॥१२॥१३॥

अथ दशमलग्नसाधनम्

लंकोदयैरेवमिहापि सम्यक्पलीकृतप्रागपरान्नताद्वै ।
लग्नं तु प्राग्वद्दशमं विधेयं नक्तं यदा भार्धयुताद्रवेस्तु ॥१४॥

लग्नोक्तविधिसे सायन सूर्यका भुक्त या भोग्य बनाकर अभीष्ट पूर्वनत अथवा परनतके पलोंमें घटावे पीछे लंकोदय राशियोंके मान घटाकर शेषक्रिया लग्नोक्त विधिसे करे तो दशम लग्न बन जाती है। इष्टकाल रात्रिका होय तो सायन सूर्यमें छः ६ राशि जोडकर लग्न या दशम लग्नका पूर्वोक्त विधिसे साधन करे ॥१४॥

अथात्र विशेषमाह

स्वेष्टान्न शुद्ध्येद्गतगम्यकालः सूर्यस्य चेद्वै खगुणैर्विनिघ्नात् ।
भक्ताल्लवाद्यं तु निजोदयैस्तद्धीनं युतं तिग्मरुचौ तनुः स्यात् ॥१५॥

जो सायन सूर्यका भुक्त या भोग्यकाल अपने इष्टकालमें न घटे तो इष्टकालको तीस ३० से गुणा करे और स्वोदय राशिके मान से उसे गुणन फलमें भाग देनेसे जो लब्ध अंशादिक हों उन्हें सायनसूर्यमें घटावे या जोडे (भुक्त काल होय तो घटावे और भोग्यकालमें जोडे) तो लग्न सिद्ध होती है ॥१५॥

मध्याह्ने चार्धरात्रे वै नतकालो न विद्यते ।
तदा तात्कालिकार्को हि भवेद्दशमलग्नकम् ॥१६॥

मध्याह्न और अर्धरात्रिके समय नतकालका अभाव होता है इस हेतु उस समयका सूर्यही दशम लग्न गिना जाता है पर अर्धरात्रिको जो इष्टकाल होय तो सूर्यमें छः राशि जोडनेसे दशम लग्न होती है ॥१६॥

अथ भावसाधनम्

सषड्भे लग्नदशमे जायातुर्यौ प्रकीर्तितौ ।
लग्नोनसुखषष्ठांशयुताल्लग्नात्ससंधयः ॥१७॥
त्रयो भावा भवंत्येवं षष्ठांशो नैकयुक्सुखात् ।
त्रयः ससंधयो भावाः षडन्ये भार्द्धयोजनात् ॥१८॥

लग्न और दशममें छः छः राशि जोड देनेसे क्रमसे जाया और चतुर्थ भाव सिद्ध होते हैं। चतुर्थ भावकी राश्यादिकोंमें लग्नकी राश्यादिक घटाकर उसका षष्ठांश निकालकर लग्नादिसे जोडता जाय तो संधिसमेत तीन भाव बन जाते हैं और फिर उस षष्ठांशको एकमें घटाकर चतुर्थ भावसे जोडता जाय तो संधिसमेत अगले तीन भाव सिद्ध होते हैं इन भावोंमें छः जोडनेसे आगेके छः भाव सिद्ध होते हैं ॥१७॥१८॥

अथ संधिस्थग्रहफलम्

द्विसंधिमध्ये स्थितखेटके स्यात्फलं तु तद्भावजमेव नूनम्।
द्विसंधितो न्यूनबहुत्वयुक्ते फलं भवेत्पूर्वपराख्यभावे ॥१९॥

जो ग्रह दो भावोंकी संधियोंके मध्यमें होय तो उसी भावका फल देता है जिसमें वह वर्तमान है दोनों संधियोंसे न्यून अथवा अधिक होय तो पूर्व परभाव अर्थात् पहले या दूसरे भावका फल देता है अर्थात् जो कम होय तो पहले भावका और ज्यादा होय तो अपने आगेके भावका फल देता है और जो ग्रह संधिके समान होय तो कुछ भी फल नहीं करता है ॥१९॥

अथ लंकोदयस्वदेशोदयानयनप्रकारः

नागाद्रिपक्षा नवनन्ददस्रा रामाक्षिरामा गजशैलपक्षाः।
नन्दाङ्कदस्रा गुणनेत्ररामा मेषात्क्रमात्स्युर्वणिजो विलोमम् ॥२०॥
लंकोदया वै कथिताः सुधीभिः पलात्मकास्ते चरखंडकैः स्वैः।
क्रमोत्क्रमस्थैर्वियुता युताश्च भवंति भानामुदयाः स्वदेशे ॥२१॥

लंकोदय और स्वदेशोदय बनानेकी रीति दिखाते हैं जैसे निम्नलिखित चक्रसे स्पष्ट सब राशियोंके मान ज्ञात होते हैं सो यह राशियोंके मान पलात्मक विद्वानोंने कहा है। पूर्वोक्तमानोंमें क्रमस्थ और उत्क्रमस्थ अपने अपने चरखंडोंको घटाने और जोडनेसे स्वदेशोदय हो जाते हैं ॥२०॥२१॥

अथ लंकोदयमानम्

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
२७८	२९९	३२३	३२३	२९९	२७८
मीन	कुंभ	मकर	धनु	वृश्चिक	तुला

इति स्पष्टाधिकारः

अथ द्वादशभावविचारः

लग्नाद्देहे व्रणं वर्णं जातिशीले सुखासुखे ।
धनात्कनकरौप्यादि द्रव्यस्य स्थिरतां वदेत् ॥१॥
सहजाद्भ्रातृसौख्यं च तेभ्यो धनसमागमम् ।
अम्बुभावाद्धनं पित्रोर्लाभं भूक्षेत्रजं वदेत् ॥२॥
विद्यापुत्राप्तिमेवं च गर्भस्रावं तु पंचमात् ।
व्याधिर्वैरिभयं विद्याद्देहे दुःखं तथा रिपौ ॥३॥
जायाव्यापारमार्गादिचिन्ता कार्य्या द्युने सदा ।
तत्रस्थखेचरो नेष्टः शुक्रश्चेत्कामुको मतः ॥४॥

लग्न[1]से शरीर, घाव, रंग, जाति, स्वभाव, सुख और दुःखका विचार करे। दूसरे[2] भावसे सुवर्ण, चांदी आदि सब द्रव्योंकी स्थिरता कहै। तीसरे भावसे भाइयोंका सुख और उनसे धनकी प्राप्तिका विचार करे। चौथे भावसे माता और पितासे सुख भूमि आदिके लाभको कहै। पांचवें भावसे विद्या और संतानका लाभ तथा गर्भपात आदिका विचार करे। छठे भावसे रोग शत्रुभय शरीरक्लेश आदि कहे। सातवें भावसे स्त्री व्यापार और मार्ग-गमन आदिका विचार करे सातवें स्थानमें कोई भी ग्रहका होना अच्छा नहीं है यदि शुक्र हो तो मनुष्य कामी होता है ॥१॥२॥३॥४॥

अष्टमाद्व्रणभीतिश्चायुर्मानं मानसी व्यथा ।
नवमे भाग्यधर्मादि चिन्त्यमेतादृशं तथा ॥५॥
दशमे कर्म राज्याप्तिः पित्रोर्द्रव्यादिकं तथा ।
लाभात्सर्वविधं लाभं पुत्रद्रव्यसुवाजिनाम् ॥६॥

---

१ लग्नका स्वामी लग्नमें हो या और किसी भावमें स्थित होकर पूर्णदृष्टि आदिसे देखता होय तो उत्तम फल होवे जो पाप ग्रह हो तो अशुभ है।

२ दूसरे भावका स्वामी उसीमें हो अथवा और कहीं स्थित होकर पूर्णदृष्टि आदिसे देखता होय तो द्रव्यादिककी वृद्धि होवे अन्यथा हानि होवे।

राज्यादिकं तथा नित्यं वदेन्मानं च वै बुधः ।
द्वादशे शत्रुपीडातिव्ययादेश्चिन्तनं सदा ।।७।।
इत्थं द्वादशभावेषु चिन्त्यं सर्वं स्वनामतः ।
शुभाशुभग्रहाणां वै दृष्ट्या योगेन सर्वथा ।।८।।

आठवें भावसे युद्धसे डर आयुका परिमाण और मनके दुःखका विचार करे। नवम भावसे भाग्य धर्मादिका विचार करे। दशम भावसे कर्म राज्यका लाभ माता पिताके धनादिका विचार करे एकादश भावसे धन और पुत्र घोडे आदि सब प्रकारके लाभको कहै। उसी भावसे राज्यलाभ एवं सन्मानादिके लाभको कहै। द्वादश भावसे शत्रुसे दुःख और बहुत सा खर्च आदिका विचार सर्वदा करना चाहिये। इसी प्रकार सब द्वादश भावोंमें उनके नामके अनुसार शुभाशुभ ग्रहोंकी दृष्टि और योगसे सब प्रकारका विचार करना चाहिये अर्थात् जो शुभ या अशुभ ग्रह उस भावको देखते होंय या उसी भावमें स्थित होंय तो सब ग्रह अपने २ अनुसार फल देते हैं ।।५।।६।।७।।८।।

अथ संतानभावविचारः

सुताधिपः स्वयं वर्षे सौम्यमित्रदृशा यदा ।
निरीक्षते सुताप्तिं वै तत्र विज्ञः समादिशेत् ।।९।।
मन्दागुर्रविभावानामङ्कानेकत्र योजयेत् ।
गुणैर्विभाजयेच्छेषे समे कन्यां वदेद्बुधः ।।१०।।
विषमे तनयं विद्यान्नात्र कार्य्या विचारणा ।
योगोऽयं प्रबलः पूर्णः सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ।।११।।

जिस वर्षमें पंचम[1] भावका स्वामी अपने भावको देखता हो तथा मित्र-ग्रह या कोई शुभग्रह देखता होय तो उस वर्षमें संतानका लाभ अवश्य होवे ऐसा कहे। जिन राशियोंमें शनि, राहु और सूर्य होय उन अंकोंको एकत्र जोडकर उसमें तीनका भाग देवे जो शेष अंक, सम (२) हो तो पंडित पुत्रीका होना कहै। विषम अंक, एक शून्य शेष हो तो पुत्रका जन्म कहै इसमें कुछ भी विचार नहीं करना चाहिये यह योग पूर्ण बलवान् है यह मैं सत्य २ कहता हूं ।।९।।१०।।११।।

---

१ पंचम भावका स्वामी पुरुषग्रह हो तो पुत्र और स्त्रीग्रह हो तो पुत्री होगी ऐसा विद्वान् कहै।

अथ दृष्टिसाधनम्

गोपंचरुद्रानलभावसंस्थं ग्रहं सदा पश्यति मित्रदृष्ट्या ।
रन्ध्रारिवित्तव्ययगं च तुल्यं खदेहकामाम्बुगतं सवैरम् ॥१२॥

हर एक ग्रह अपनेसे नवें ९ पांचवें ५ ग्यारहवें ११ और तीसरे ३ इन स्थानोंसे स्थित हर एक ग्रहको मित्र दृष्टि अर्थात् पूर्ण दृष्टिसे देखते हैं और आठवें ८ छठे ६ दूसरे २ और बारहवें १२ भावमें स्थितको सम दृष्टिसे देखते हैं। दशवें १० पहले १ सातवें ७ और चौथे ४ भावमें वर्तमान ग्रहको शत्रुदृष्टिसे देखते हैं ॥१२॥

अथ ग्रहदृष्टिफलम्

यो भावः स्वामिना दृष्टो युक्तो वा तस्य वर्धनम् ।
पापैर्दृष्टो युतो वा स्यात्तस्य हानिं विनिर्दिशेत् ॥१३॥

जिस भावको उसका स्वामी देखता हो अथवा उसीमें युक्त होय तो उस भावकी वृद्धि होती है और जो पापग्रह उसे देखते हों या युक्त होंय तो उस भावकी हानि होती है ॥१३॥

अथोदयास्तलग्नसाधनम्

उदेति यस्मिन्सवितोदयाख्यं तस्माच्चतुर्थे खलु मध्यलग्नम् ।
तत्सप्तमेऽस्तं रविरेति नित्यमस्ताख्यलग्नं कथितं तदेव ॥१४॥

जिस राशिमें सूर्योदय होता है उसे उदय लग्न कहते हैं और उससे चौथेको मध्यलग्न कहते हैं तथा उदय लग्नसे सप्तराशिमें सूर्य सर्वदा अस्त होते हैं अतः उसीको अस्तलग्न कहते हैं ॥१४॥

अथ ग्रहाणां भावफलानि

तत्रादौ रविफलम्

रविर्लग्नगो वातपित्तं करोति कलत्रांगपीडां शिरोर्तेश्च रोगम् ।
विवादं जनानांभिवेद्गुप्तचिन्ता दशानेष्टकारी भवेद्वायनेऽस्मिन् ॥१॥

जो वर्षकुण्डलीमें लग्नमें सूर्य हो तो वात, पित्तका रोग स्त्रीके अङ्गमें पीडा शिरमें दर्द मनुष्योंके साथ विवाद और गुप्तचिन्ता करता है तथा वर्षमें इसकी दशा मनुष्योंको नेष्ट होती है ।।१।।

कुटुम्बाद्विरोधो नृपाद्भीतिकष्टं धनार्त्तिर्धनस्थेरवौ मानवानाम् ।
पशूनां प्रपीडोदरे चापदाः स्युः ससौम्यान्वितो द्रव्यलाभं करोति।२।।

धनस्थानमें सूर्य हो तो मनुष्योंको कुटुंबसे विरोध, राजासे भय, धनकी हानि, पशुओंको पीडा और पेटमें रोग अनेक प्रकारकी आपद् हो शुभ ग्रहके साथ हो तो द्रव्यका लाभ करता है ।।२।।

तृतीयगोऽर्कोऽपि सहोदराणां पीडां करोत्यस्य हि वर्षलग्ने ।
पराक्रमं राजकृपां च लक्ष्मीं रिपुक्षयं कीर्त्तिविवर्धनं च ।।३।।

वर्षमें सूर्य तृतीयस्थानमें हो तो भाइयोंको पीडा करता है और पराक्रम, राज्यसुख, लक्ष्मी इनकी प्राप्ति और शत्रुनाश, यश इनकी वृद्धि करता है ।।३।।

पशोः पीडनं तुर्यसंस्थे रवौ च कृषेः कर्म्मणां हानिरत्यंतपीडा ।
नृपाद्भीतिकष्टं भवेन्मातृपीडोदरे हृद्यपि स्यात्प्रपीडाऽब्दमध्ये।।४।।

चतुर्थ स्थानमें सूर्य हो तो पशुओंको पीडा करे खेतीके काममें हानि हो शरीरमें पीडा, राजासे भय, माताको कष्ट और पेट तथा छातीमें पीडा हो ।।४।।

दिनेशे सुतस्थे सुतांगेषु पीडा सुबुद्धेश्च हानिर्विवादो जनानाम् ।
भवेच्छोकमोहादि चांगेषु रोगो धनार्त्तिश्च भूपाद्भयं तद्दशायाम्।।५।।

पंचम स्थानमें सूर्य हो तो पुत्रोंके शरीरमें पीडा हो सुबुद्धिकी हानि मनुष्योंसे लडाई शोक मोह शरीरमें रोग, धनका नाश और राजासे भय ।।५।।

रिपूणां विनाशो रुजो मातृपक्षे रवौ षष्ठसंस्थे सुखाप्तिर्जनानाम् ।
नृपान्मित्रपक्षाज्जयः स्वार्थलाभो भवेद्द्रव्यलाभः क्रये विक्रयेऽपि ।।६।।

सूर्य छठे स्थानमें हो तो शत्रुओंका नाश मातृपक्षमें पीडा मनुष्योंको सुखकी प्राप्ति राजा और मित्रपक्षसे लाभ तथा व्यापारमें धनका लाभ हो ।।६।।

कलत्रेऽर्कसंस्थे कलत्रांगपीडा स्वकीयांगपीडा तथा तद्दशायाम् ।
शिरोर्त्तिश्च मार्गाद्भयं वै विवादो गुदे पादयोः पीडने वर्षमध्ये।।७।।

सूर्य सप्तम घरमें हो तो स्त्रीके अंगमें पीडा तथा अपने शरीरमें भी पीडा हो इसकी दशामें मस्तकमें दर्द मार्गसे भय विवाद और गुदा तथा पगोंमें पीडा हो ॥७॥

रवौ चाष्टमे बंधुदुःखं च कष्टं यशोविद्रवो व्याधिशोकं धनार्तिः ।
कलत्रांगपीडा सुतस्यांगरोगो व्रणं वातपीडा भवेद्वर्षमध्ये ॥८॥

सूर्य अष्टम स्थानमें हो तो भाइयोंको दुःख और कष्ट हो यश नष्ट हो शरीरमें रोग धनका नाश स्त्रीको कष्ट पुत्रको कष्ट और फोडा फुनसी हो ॥८॥

धर्मस्थितोऽर्कश्च सहोदराणां पीडाकरः क्लेशविवर्धनं च ।
धर्मप्रदो राज्ययशःप्रदः स्यात्तद्वर्षमध्ये स्वदशांगतश्चेत् ॥९॥

सूर्य नवम स्थानमें हो तो भाइयोंको पीडा हो दुःख बढे धर्मकी वृद्धि और राज्यसे यशका लाभ यह सब फल सूर्यकी दशामें हो ॥९॥

यदा दिनेशो गगनाश्रितः स्याद्राज्यार्थदो नामविवर्द्धनश्च ।
हिरण्यभूम्यंबरलाभकारी चतुष्पदांगेषु रुजो विवृद्धिः ॥१०॥

सूर्य दशम भावमें हो तो राजासे लाभ करावे धनकी प्राप्ति सुवर्ण भूमी वस्त्र इन्होंका लाभ और पशुओंको पीडा करे ॥१०॥

रवौ लाभगे लाभकारी नृपः स्याद्धनाप्तिश्चधान्यांबरं वै हिरण्यम् ।
विलासादिसौख्यं रिपूणां विनाशः सुतस्यांगपीडा भवेदत्र वर्षे ॥११॥

सूर्य ग्यारहवें स्थानमें हो तो राजासे धनका लाभ तथा धान्य वस्त्र सुवर्ण इनकी प्राप्ति होवे और विलास (स्त्रीभोगादिक) की प्राप्ति तथा शत्रुका नाश एवं पुत्रके शरीरमें पीडा होवे ॥११॥

व्ययस्थितश्चेत्खलु भास्करोऽसौ स्त्रीविग्रहोद्वेगकृतांघ्रिरोगम् ।
व्ययंच शीर्षोदरनेत्रपीडां करोति चिंतां रिपुभिर्विवादम् ॥१२॥

सूर्य बारहवें भावमें हो तो स्त्रीसे विग्रह चित्तमें उद्वेग पगोंमें पीडा वृथा खर्च हो और मस्तक उदर नेत्रोंमें पीडा तथा चिंता एवं शत्रुसे विवाद होवे ॥१२॥



अथ चंद्रफलम्

तनुगतो ननु चेद्रजनीकरो विकलता कफकृज्ज्वरपीडनम् ।
भवति पापखगान्वितदृग्यदा ननु विनाशकरो बहुलव्ययः ॥१॥

चंद्रमा वर्षके लग्नमें हो तो शरीरमें विकलता कफकरके ज्वरकी पीडा हो और पापग्रहोंसे युक्त अथवा दृष्ट हो तो शरीरको नष्ट करे तथा बहुत-सा खर्च करे ॥१॥

कुटुंबाज्जयं मित्रपक्षाच्च लाभं धनाढ्यं धनस्थः शशांकः प्रकुर्यात् ।
रिपूणां विनाशं तथा नेत्रपीडा भवेदब्दमध्ये नृपात्सौख्यकारी ॥२॥

चंद्रमा धनभावमें हो तो कुटुंबसे मित्रजनोंसे लाभ तथा धनवान् करे शत्रुका नाश नेत्रपीडा और राजासे सुख होवे ॥२॥

तृतीये स्थितःशीतरश्मिर्यदा स्यात्तदा सोदराणां भवेत्सौख्यकारी ।
धनाप्तिच पुण्योदयं गुप्तसौख्यं प्रतिष्ठाविवृद्धिं करोतीह वर्षे ॥३॥

चंद्रमा तृतीय स्थानमें हो तो भाइयोंको सुख होवे धनकी प्राप्ति पुण्यका उदय और गुप्तसुख तथा प्रतिष्ठाकी वृद्धि करे ॥३॥

शशांके चतुर्थे च भूपाज्जयः स्यात्कृषेः कर्मणां लाभवान्स्यात्सुखी च
धनाप्तिः क्रये विक्रये चाब्दमध्ये सुखं वाहनानां रिपोर्नाशनं च ॥४॥

चंद्रमा चतुर्थ स्थानमें हो तो राजासे जयकी प्राप्ति खेतीके काममें लाभ शरीरमें सुख व्यापारमें लाभ तथा वाहनोंका सुख शत्रुका नाश होवे॥४॥

सुतस्थानगो रात्रिनाथः स्वबुद्ध्या जयं मित्रपक्षाच्च लाभं करोति।
सुतांगेषु पीडा भवेत्पापदृष्टिः सुतस्यापि सौख्यं यदा सौम्यदृष्टिः ।५।

चंद्रमा पंचम स्थानमें हो तो अपनी बुद्धिसे जयकी प्राप्ति मित्र लोगोंसे लाभ करे जो पापग्रहोंकी दृष्टि हो तो पुत्रोंके शरीरमें रोग करे यदि सौम्य ग्रहोंकी दृष्टि हो तो पुत्रोंका सुख करे ॥५॥

अरिस्थानगो रात्रिनाथो रिपूणां विवादो विरोधो भवेन्नेत्रपीडा ।
व्ययं व्यग्रतां गुप्तचिंतां तनोति कलत्रांगपीडां करोतीह वर्षे ॥६॥

चंद्रमा छठे घरमें हो तो शत्रुओंसे विवाद नेत्रोंमें पीडा खर्च विकलता गुप्तचिंता और स्त्रीको पीडा होवै ॥६॥

कलत्रे शशांको यदा पापदृष्टो ज्वरं वातपीडां भयं दारुणं च ।
कलत्रांगपीडां कफोत्पत्तिबाधां ससौम्यान्वितो द्रव्यलाभं करोति । ७ ।

चंद्रमा सप्तम भावमें और पापग्रहोंसे दृष्ट हो तो ज्वर, वातपीडा, भय और स्त्रीको पीडा और कफोत्पत्तिकी बाधा करे और शुभग्रहोंसे युक्त हो तो धनका लाभ करे ॥७॥

निधनगतशशांकः कष्टवंतं करोति ज्वरवमनविकारं चोदरे गुप्तपीडा।
भवति कफविकारो नेत्ररोगांगभंगो
जलभयमरिवादो द्रव्यनाशोऽब्दमध्ये ॥८॥

चंद्रमा अष्टम भावमें हो तो उस वर्षमें कष्ट हो, ज्वर, वमन, उदर-रोग, कफरोग, नेत्ररोग, अंगभंग, जलका भय, शत्रुओंसे विवाद और धनका नाश होवे ॥८॥

पुण्योदयं धर्मगतः शशांको भाग्योदयं चार्थसमागमं च ।
स्वगेहसौख्यं च रिपोर्विनाशं व्यापारसौख्यं च करोति वर्षे ॥९॥

चंद्रमा वर्षमें नवम स्थानमें हो तो पुण्यका उदय भाग्योदय धनका लाभ अपने घरमें सुख शत्रुका नाश और उस वर्षमें व्यापारमें सुख होवे ॥९॥

कर्मोदयं प्रकुरुते गगने शशांके द्रव्यागमं नृपकुलाद्रिपुपक्षनाशम् ।
व्यापारतोबहुसुखं महतीं प्रतिष्ठां कीर्त्तिप्रवर्द्धनसुतांबरलाभमाशु १०

चंद्रमा दशम भावमें हो तो कर्मका उदय राजद्वारा धनकी प्राप्ति शत्रुओंका नाश व्यापारसे बहुत सुख बहुत प्रतिष्ठा कीर्ति वृद्धि और पुत्र तथा वस्त्रोंका लाभ होय ॥१०॥

रिपोर्नाशनं लाभसंस्थे शशांके बहुद्रव्यलाभं क्रये विक्रयेऽपि ।
नृपात्सौख्यलाभं सुतस्यागमं च प्रतिष्ठाविवृद्धिर्भवेद्धायनेऽस्मिन् ।११।

चंद्रमा ग्यारहवें स्थानमें हो तो शत्रुका नाश व्यापारद्वारा बहुतही धनलाभ राजासे सुख पुत्रकी प्राप्ति और उस वर्षमें ईज्जत बढे ॥११॥

शशांको व्ययस्थो रिपूणां प्रपीडां तथा सद्व्ययं नेत्ररोगं करोति ।
विवादं जनानां महाकष्टसाध्यां कफार्तिं च गुल्मोदयं तत्र वर्षे ॥१२॥

चंद्रमा बारहवें भावमें हो तो शत्रुओंसे पीडा हो अच्छे काममें धनका खर्च नेत्रोंमें रोग हो मनुष्योंसे लडाई और महाकष्टसाध्य कफकी पीडा तथा गुल्मरोगकी उत्पत्ति उस वर्षमें होवे ।।१२।।

अथ भौमफलम्

धरणिजनुषि लग्ने स्याद्व्रणं वातपीडा
भवति रिपुविवादो नेत्रशीर्षे च रोगः ।
ज्वरवमनविकारं चांगनानां च कष्टं
नृपभयमथ लोहादग्नितो वा भयं च ।।१।।

मंगल वर्षलग्नमें हो तो फोडा वादीकी पीडा शत्रुओंसे विवाद नेत्र और मस्तकमें पीडा ज्वर वमनका विकार स्त्रीको कष्ट और राजासे तथा लोह अग्निसे भय होवे ।।१।।

धनस्थो धरण्यात्मजो द्रव्यनाशं शिरोर्त्तिजनानांविरोधं प्रकुर्यात् ।
तथा सर्पवह्न्योर्भयं शोकमोहौ कलत्रेऽक्षिरोगं करोतीह वर्षे ।।२।।

मंगल द्वितीय भावमें हो तो द्रव्यका नाश शिरमें पीडा मनुष्योंसे विरोध तथा सर्प अग्निसे भय और शोक मोह स्त्रीको पीडा करे ।।२।।

तृतीये स्थिते क्ष्मासुते बांधवानां भवेदंगकष्टं सुखं वाहनानाम् ।
रिपूणां विनाशस्तथा द्रव्यलाभो नृपान्मित्रपक्षाज्जयो हायनेऽस्मिन्।३

मंगल तृतीय भावमें हो तो भाइयोंको कष्ट सवारीका सुख शत्रुका नाश तथा धनका लाभ और राजासे तथा मित्रोंसे इस वर्षमें जय प्राप्ति हो ।।३।।

चतुर्थे कुजो वह्निपीडा व्रणार्ति पशोः पीडनं व्यग्रतां क्लेशकष्टम् ।
कृषेः कर्मणां हानिमत्त्येव कुर्यात् क्रये विक्रये चाब्दमध्ये तथैव ।।४।।

मंगल चतुर्थ स्थानमें हो तो अग्निपीडा फोडा आदि करे पशुओंको पीडा विकलता क्लेश कष्ट और खेतीमें हानि तथा व्यापारमें हानि हो ।।४।।

सुतानां प्रपीडा कुजे पंचमस्थे रिपूणां विवादो भवेद्व्यग्रता च ।
स्वबुद्धेर्विनाशो भवेच्चाग्निघातः सशोकोदरे गुप्तपीडाब्दमध्ये ।।५।।

मंगल पंचम भावमें हो तो पुत्रोंको पीडा शत्रुओंसे विवाद चित्तभ्रम बुद्धिका नाश अग्निभय और शोक तथा उदरमें पीडा हो ॥५॥

कुजः षष्ठगः शत्रुनाशं करोति स्वभूपाज्जयं मित्रपक्षाच्च लाभम् ।
हयानां च सौख्यं भवेदंगनानां सुखं हायनेऽस्मिन् दशायां च तस्य॥६॥

मंगल छठे घरमें हो तो शत्रुओंका नाश राजासे जयकी प्राप्ति मित्रोंसे लाभ घोडोंका सुख स्त्रियोंको सुख आदि फल करे ॥६॥

कलत्रे स्थिते स्यात्सुतस्त्रीषु रोगस्तथा चात्मनो मार्गता क्लेशकष्टम्।
तथा वै रिपूणां विवादो जनानां दशानेष्टकारी भवेद्धायनेऽस्मिन् ॥७॥

मंगल सप्तम भावमें हो तो पुत्र स्त्रीको रोग हो तथा अपने को मार्गसे कष्ट हो शत्रुओंसे विवाद हो, इस वर्षमें मंगलकी दशा अशुभ है ॥७॥

कुजे चाष्टमे शत्रुपीडांगकष्टं व्रणस्योदयश्चांगनानां च रोगः ।
धनानां विनाशो भवेच्छस्त्रघातस्तथा व्यग्रता गुप्तचिंता नरस्य ॥८॥

मंगल अष्टम भावमें हो तो शत्रुओंकी पीडा शरीरमें कष्ट फोडा आदि हों स्त्रीको कष्ट धनका नाश शस्त्रघात विकलता गुप्त चिंता हो ॥८॥

धर्मे स्थिते भूमिसुते च वर्षे पुण्योदयो वित्तसमागमं च ।
भाग्योदयो मानविवर्द्धनं च महाप्रतिष्ठा बहुला च तत्र ॥९॥

मंगल नवम स्थानमें हो तो पुण्यका उदय धनका लाभ भाग्यका उदय और मान बढे तथा बडी प्रतिष्ठा हो ॥९॥

कर्मस्थितो भूतनयोऽब्दमध्ये कर्मोदयं चार्थसमागमं च ।
राज्यार्थलाभं च महाप्रतिष्ठां करोति मानं सुखसंपदश्च ॥१०॥

मंगल दशम स्थानमें हो तो भाग्यका उदय धनका लाभ तथा राजासे लाभ बडी प्रतिष्ठा और मान सुख संपदा आदि होवे ॥१०॥

अवनिजनुषि लाभे राज्यसौख्यागमश्च
भवति रिपुविनाशो मित्रपक्षाज्जयश्च ।
हयगजसुहिरण्यं प्राप्यते चाम्बराणि
तनयसुखविलासो जायतेऽस्मिश्च वर्षे ॥११॥

मंगल ग्यारहवें भावमें हो तो राजासे सुखकी प्राप्ति शत्रुका नाश

मित्रपक्षसे लाभ विजय होवे घोडा, हाथी, सुवर्ण, वस्त्र इन्होंकी प्राप्ति और इस वर्षमें पुत्रका सुख होवे ॥११॥

व्ययश्चापदा भूमिपुत्रे व्ययस्थे भवेन्नेत्रपीडा च कर्णे विकारः ।
शिरोर्त्तिर्जनानां विवादस्तथा स्यात्कलत्रांगचिंता भवेत्तत्र वर्षे ॥१२॥

मंगल बारहवें भावमें हो तो नेत्रोंमें कानमें पीडा शिरमें दर्द मनुष्योंसे विवाद और स्त्रीको पीडा इस वर्षमें हो ॥१२॥

अथ बुधफलम्

रजनिकरसुतः स्याल्लग्नगो हायनेऽस्मिन्
बहुलबलविवृद्धिर्योषितां चापि सौख्यम् ।
भवति रिपुविनाशो भूपपक्षाच्च लाभो
धनजयसुखकारी मित्रलाभं करोति ॥१..

बुध वर्षके लग्नमें हो तो बहुतही बलकी वृद्धि स्त्रियोंको सुख शत्रुओंका नाश राजपक्षसे लाभ धन विजय सुख करे और मित्रोंका लाभ होवे ॥१॥

धनस्थो यदि स्यात्सुतः शीतरश्मेर्भवेद्द्रव्यलाभः कुटुंबाज्जयश्च ।
रिपोर्नाशनं मानकृत्योश्च वृद्धिःप्रतिष्ठाधिका हायनेऽस्मिन्सुखं च॥२॥

बुध धनस्थानमें हो तो धनका लाभ कुटुंबसे विजयकी प्राप्ति शत्रुका नाश मानवृद्धि कीर्तिवृद्धि और अधिक प्रतिष्ठा तथा सुख इस वर्षमें होवे ॥२॥

शशिसुतश्च तृतीयगतो यदा सकलतापविनाशकरस्तदा ।
भवति मानविवृद्धिरथो यशः सुतसुखं प्रकरोति धनागमम् ॥३॥

बुध तीसरे भावमें हो तो संपूर्ण संताप दूर होवे मान तथा यशकी वृद्धि पुत्रका सुख और धनका लाभ करे ॥३॥

बुधश्चतुर्थः प्रकरोति सौख्यं द्रव्यागमं मित्रसमागमं च ।
गोभूहिरण्यादिसमागमंच महासुखं वाहनमत्र वर्षे ॥४॥

बुध चतुर्थ भावमें हो तो सुखकी प्राप्ति धनका लाभ मित्रमिलाप, गो, भूमी, सुवर्ण, सवारी इनकी प्राप्ति और इस वर्षमें महान् सुख होवे ॥४॥

सुतभवनगतश्चेत्सोमपुत्रः सुतानां प्रसवसुखकरः स्यादर्थलाभप्रदश्च
भृतकजनसुखं स्याद्धेमसस्यांबराणां सुखमपि नृपपक्षान्मित्र-
पक्षाज्जयश्च ।।५।।

बुध पंचम भावमें हो तो पुत्रोंकी उत्पत्तिसे सुख होवे और धनका लाभ नोकरोंसे सुख सुवर्ण वस्त्र अन्नका लाभ और राजपक्षसे मित्रपक्षसे विजयकी प्राप्ति होवे ।।५।।

रिपुस्थानसंस्थो रिपूणां विवादो भवेदंगनानां च कष्टं करोति ।
व्ययं व्यग्रतां स्वे शरीरे च रोगं कफार्तिं महत्कष्टमप्यत्र वर्षे ।।६।।

बुध छठे भावमें हो तो शत्रुओंसे विवाद स्त्रियों को कष्ट वृथा खर्च चित्तमें विकलता शरीरमें रोग इस वर्षमें वहुत होवे ।।६।।

शशांकात्मजे सप्तमस्थेऽङ्गनानां विलासादिसौख्यं भवत्यत्र वर्षे ।
प्रतिष्ठाधिकारो हिरण्यांबराप्तिर्जयः सर्वदा तद्दशायां तथैव ।।७।।

बुध सप्तम भावमें हो तो स्त्रियोंके संग भोग विलासका सुख हो और इस वर्षमें अधिक प्रतिष्ठा वढे तथा सुवर्ण वस्त्र विजय इन्होंकी प्राप्ति बुधकी दशामें होवे ।।७।।

निशानाथपुत्रो यदा रंध्रसंस्थो नरं मृत्युतुल्यं कफार्तिं करोति
ज्वराणां प्रकोपो भवेन्नेत्रपीडा भयं व्यग्रता हायने तद्दशायाम् ।।८।।

बुध अष्टम स्थानमें हो तो मनुष्यको मृत्युके समान कफकी पीडा होवे और ज्वरोंका प्रकोप नेत्रोंमें पीडा भय और चित्तमें घवडाहट रहे यह फल बुधकी दशामें होवे ।।८।।

धर्मस्थितः शशिसुतः सुतलाभसौख्यमर्थागमं सततमंगलमाशु कुर्यात्
भूपाज्जयो भवति कीर्त्तिविवर्द्धनं च भाग्योदयोरिपुविनाशनमीह
वर्षे ।।९।।

बुध नवम भावमें हो तो पुत्रका लाभ सुख धनकी वृद्धि, निरंतर मंगल कार्य हो राजासे विजयप्राप्ति कीर्तिकी वृद्धि और भाग्योदय तथा शत्रुओंका नाश इस वर्षमें होवे ।।९।।

गगनगः शशिजो यदि हायने भवति वाहनसौख्यकरस्तदा ।
सुतविवृद्धिरथापि धनागमो विलसनं च तथा नृपतेर्जयः ।।१०।।

बुध दशम भावमें हो तो सवारीका सुख पुत्रोंकी वृद्धि, धनका लाभ भोग विलास और राजासे विजयप्राप्ति हो ॥१०॥

लाभाश्रितः शशिसुतो जयसंपदश्च
धान्याम्बराणि, बहुलानि करोत्यवश्यम् ।
कीर्तेर्विवर्द्धनमनोऽर्थसमागमश्च
स्याद्धायने पशुविवर्द्धनमत्र लाभः ॥११॥

बुध ग्यारहवें भावमें हो तो विजय संपत्ति धान्य, वस्त्र इन्होंकी वृद्धि अवश्य होवे कीर्ति बढे मनोरथ सिद्ध हो और इस वर्षमें पशुओंकी वृद्धि तथा लाभ हो ॥११॥

बुधे द्वादशस्थे रिपूणां विवादो व्यये गुप्तचिंता च कर्णे विकारः ।
दशा नेष्टकारी भवेन्नेत्रपीडा कफार्त्तिश्च कष्टं तथा हायनेऽस्मिन् ॥१२

बुध बारहवें भावमें हो तो शत्रुओंसे विवाद खर्च गुप्तचिंता कानमें पीडा नेत्रोंमें पीडा कफका दुःख इस वर्षमें इसकी दशामें कष्ट हो ॥१२॥

अथ गुरुफलम्

जीवे लग्नगते हयाम्बरसुखं प्राप्नोति वृद्धिं परां
राज्यात्सौख्यसमागमं च बहुलव्यापारतश्चोदयः ।
कीर्त्तेश्चापि विवर्धनं रिपुजनो नश्यत्यवश्यं तथा
जायासौख्यमथापि मौक्तिकधनं हेम्नश्च लाभो भवेत् ॥१॥

गुरु वर्षके लग्नमें हो तो घोडा वस्त्र इनका सुख और परम वृद्धि हो राजासे मिलाप और सुख व्यापारकी वृद्धि कीर्तिकी वृद्धि शत्रुओंका नाश हो तथा स्त्रीका सुख हो और मोती धन सुवर्ण इनका लाभ होवे ॥१॥

कुटुंबराशौ च गते सुरेज्ये धनादिभोगाल्लभते मनुष्यः ।
चतुष्पदानां च समागमः स्याद्धायने भूपजनाच्च लाभः ॥२॥

गुरु द्वितीय भावमें हो तो मनुष्य उस वर्षमें धन आदिका भोग भोगे और पशुओंकी प्राप्ति तथा राजासे लाभ हो ॥२॥

तृतीयसंस्थः सुरराजमंत्री भूपाज्जयं कीर्त्तिविवर्द्धनं च ।
सस्यांबराणां च तथा धनानां करोति वृद्धिं महतीं च वर्षे ॥३॥

गुरु तृतीय भावमें हो तो राजासे विजय यशकी वृद्धि हो खेती वस्त्र तथा धन इनकी उस वर्षमें अधिक वृद्धि हो ॥३॥

सुरेज्ये सुखस्थे सुखं वाहनानां क्रये विक्रये लाभकारी जनस्य ।
भवेद्भूपपक्षाज्जयो हायनेऽस्मिन्महालाभदः स्यात्कृषेः कर्षणश्च ॥४

गुरु चतुर्थ भावमें हो तो उस वर्षमें मनुष्यको वाहनोंका सुख व्यापार में लाभ राजासे विजय और खेतीके काममें अधिक लाभ होवे ॥४॥

सुतस्थानगो देवमंत्री सुतानां विवृद्धिः स्वबुद्ध्या जयं हायनेऽस्मिन् ।
रिपूणां विनाशः सुखं चेष्ट भोगांस्तथा गोहिरण्याम्बराप्तिं करोति।५

गुरु पंचम भावमें हो तो उस वर्षमें पुत्रोंकी वृद्धि बुद्धिके बलसे जय शत्रुओंका नाश शरीर सुख मनोवांछित भोग तथा गो, सुवर्ण, वस्त्र इनकी प्राप्ति होवे ॥५॥

कष्टं रिपूणां रिपुगः सुरेज्यो भयार्त्तिदोषान्कुरुते नराणाम् ।
भार्याङ्गपीडामथ नेत्ररोगज्वरातिसारं प्रकरोति वर्षे ॥६॥

गुरु षष्ठ स्थानमें हो तो उस वर्षमें मनुष्योंको शत्रुओंका कष्ट और भय आदि दोष हो और स्त्रीके शरीरमें पीडा नेत्ररोग, ज्वर और अतिसार हो ॥६॥

कलत्रे सुरेज्ये कलत्राज्जनस्य सुखं निर्भयं शत्रुनाशं करोति ।
सुखं वाहनानां विलासादिकं च नृपाल्लब्धलक्ष्मीर्भवेद्धायनेऽस्मिन् ॥७

गुरु सप्तम स्थानमें हो तो उस वर्षमें मनुष्यको स्त्रीसुख निर्भयता शत्रुनाश वाहनोंका सुख भोग विलास और राजासे लक्ष्मीकी प्राप्ति यह लाभ होवे ॥७॥

ज्वरवमनकफार्त्तिर्नं धनस्थे सुरेज्येबहुलकठिनरोगः कर्णयोर्नेत्रयोश्च ।
भवति भयसरीणामङ्गनाङ्गेषु कष्टं व्रणकृतबहुपीडा हायनेऽस्मिन्न-राणाम् ॥८॥

गुरु अष्टम भावमें हो तो उस वर्षमें ज्वर वमन और कफ इनकी

पीडा हो तथा कान और नेत्रोंमें अति कठिन रोग हो शत्रुओंका भय स्त्रीको कष्ट और व्रण आदिकी मनुष्योंको अधिक पीडा हो ॥८॥

वाचस्पतिर्धर्मगतो नराणां करोति धर्मं बहुलं सुखं च ।
भाग्योदयं चार्थसमागमं च तीर्थाटनं पुण्यमतिं प्रकुर्यात् ॥९॥

गुरु नवम स्थानमें हो तो मनुष्योंको अधिक धर्म सुखकी प्राप्ति और भाग्योदय धनलाभ तथा तीर्थयात्रा एवं पुण्यकार्यमें वृद्धि करे ॥९॥

व्योम्नि स्थितश्चेत्सुरराजमंत्री हेमांबराप्तिं च जयं करोति ।
भूपप्रसादात्क्षितिगोधनाप्तिः स्याद्धायने शत्रुविनाशनं च ॥१०॥

गुरु दशम स्थान में हो तो उस वर्षमें सुवर्ण वस्त्र और विजय इनकी प्राप्ति करे तथा राजाके प्रसादसे पृथ्वी गौ धन इनका लाभ और शत्रुका नाश हो ॥१०॥

जयो मानवानां सुरेज्ये च लाभे भवेद्वै जनानां हयानां च लाभः ।
सुतस्योदयो जायते शत्रुनाशःप्रतिष्ठाविवृद्धिः सुतस्यापि सौख्यम्॥११

गुरु एकादश भावमें हो तो उस वर्षमें जय हो हाथीका घोडोंका लाभ पुत्रकी प्राप्ति शत्रुका नाश प्रतिष्ठाकी वृद्धि और पुत्रका सुख यह फल होवें ॥११॥

रिष्फःस्थितः सुरगुरुर्बहुलव्यथाकृत्
कष्टप्रवादनृपभीति करोति वर्षे ।
नेत्राङ्गपीडनकफार्तिजनप्रवादं
हानिर्भयं भवति शोकविकारकारी ॥१२॥

गुरु द्वादश भावमें हो तो उस वर्षमें बहुतसी आपत्ति कष्ट राजभय नेत्र और शरीरमें पीडा कफ रोग मनुष्योंके साथ विवाद हानि भय शोक और विकार आदि होय ॥१२॥

अथ भृगुफलम्

तनुस्थानगो भार्गवश्चेदिह स्यात्प्रतिष्ठाविशेषं समृद्धयागमं च ।
रिपूणां विनाशं तथा भूपमानं जयं भूषणादीन्नराणां करोति ॥१॥

भृगु वर्षके लग्नमें हो तो उस वर्षमें विशेष प्रतिष्ठा और सम्पत्तिका लाभ हो तथा शत्रुओंका नाश राजासे सन्मान एवं जय हो और आभूषणोंकी प्राप्ति हो ॥१॥

धनस्थे कवौ धान्यलाभो धनाप्तिर्भवेन्म्लेच्छजात्याः सुखं संपदश्च ।
नरो राजतुल्यो भवत्यत्र वर्षे पशूनां हयानां गृहे स्यात्सुखं च ॥२॥

शुक्र द्वितीय भावमें हो तो उस वर्षमें धान्य और धनका लाभ हो किसी म्लेच्छजातिसे सुख और सम्पत्ति मिले तथा मनुष्य राजाके तुल्य हो और पशुओं तथा घोडोंका सुख हो ॥२॥

भृगुस्तृतीयश्च सहोदराणां सुखं प्रकुर्याद्विविधैः प्रकारैः ।
अर्थागमं कीर्त्तिविवर्द्धनं च जनोपकारं च करोति वर्षे ॥३॥

शुक्र तृतीय भावमें हो तो उस वर्षमें अनेक प्रकारसे भाइयोंका सुख हो धनका लाभ हो यश बढे और वह मनुष्य दूसरोंका उपकार भी करे ॥३॥

प्रथमदैत्यगुरुः सुखगो यदा सुखकरः कृषिवाहनयोस्तदा ।
धरणिलब्धिसुवर्णसमागमो भवति भूपसमो मनुजस्तदा ॥४॥

शुक्र चतुर्थ भावमें हो तो खेती और वाहनोंका सुख हो भूमि मिले सुवर्णका लाभ हो और मनुष्य राजाके समान सुखी होय ॥४॥

सुतानां विवृद्धिर्भृगुः पंचमस्थो भयक्लेशचिन्तापदानां विनाशः ।
रिपूणां विनाशं तथा वर्षलग्ने महाभोगवंतं धनाढ्यं करोति ॥५॥

शुक्र पंचम भावमें हो तो पुत्रोंकी वृद्धि होय और भय, क्लेश, चिंता तथा सब आपत्तियोंका और शत्रुओंका भी नाश होवे और मनुष्यको महाभोगोंकी प्राप्ति तथा धनाढ्य करे ॥५॥

अरिस्थानगो हायने दैत्यमंत्री जनानां विवादं रिपोर्भीतिकष्टम् ।
भवेद्गुप्तचिन्ताङ्गरोगप्रपीडा शिरोऽर्त्तिश्च नेत्रोदरे पीडनं च ॥६॥

शुक्र छठे भावमें हो तो मनुष्योंसे विवाद करावे शत्रुओंसे भय और कष्ट हो, इस वर्षमें गुप्त चिंता शरीरमें रोग तथा शिर नेत्र पेटमें पीडा होय ॥६॥

कलत्रे कविश्चेत्स्थितो वर्षलग्ने कलत्राङ्गसौख्यं विलासादिकं च ।
रिपोर्नाशनं मानवानां च सौख्यं भवेद्वस्त्रहेमादिलाभं करोति ॥७॥

शुक्र सप्तम स्थानमें हो तो स्त्रीका सुख भोग विलासोंका सुख शत्रुओंका नाश हो शरीरसुख हो और वस्त्र तथा सुवर्णका लाभ हो ।।७।।

मृत्युस्थितो मृत्युसमं मनुष्यं शुक्रः करोतीह जनापवादम् ।
ज्वरादिपीडामथ भीतिकष्टं नेत्रे च रोगो रिपुभिर्विवादम् ।।८।।

शुक्र अष्टम भावमें हो तो मनुष्यको मृत्युके समान कष्ट करता है और इस वर्षमें मनुष्य निन्दा करे तथा ज्वर आदि पीडा भयसे कष्ट और नेत्रोंमें रोग तथा शत्रुओंसे विवाद होवे ।।८।।

धर्मस्थितो धर्मकरः कविः स्यान्नरेन्द्रतुल्यं च नरं करोति ।
सुखप्रदो भूषणवाहनादेर्गोभूहिरण्याम्बरलाभदः स्यात् ।।९।।

शुक्र नवम भावमें हो तो धर्मकी वृद्धि हो और मनुष्य राजाके समान हो और इस वर्षमें सुख हो और भूषण वाहनादि तथा गौ, भूमि, सुवर्ण, वस्त्र इनका लाभ होवे ।।९।।

गगनगे भृगुनन्दनसंज्ञके नृपसमो मनुजोऽथ महाजयः ।
भवति गोधनधान्यसमागमो बहुसुखं कृषिवाहनयोर्मतम् ।।१०।।

शुक्र दशम भावमें हो तो मनुष्य राजाके समान हो और सर्वत्र जय हो तथा गौ धन धान्यका लाभ हो और खेती तथा वाहनोंका अधिक सुख मिले ।।१०।।

कविर्लाभगो लाभकृत्स्वर्णकस्य जयं मानवानां करोतीह वर्षे ।
सुतानां विवृद्धिः सुखं राजपक्षाद्रिपूणां विनाशं तथा मित्रवृद्धिः ।।११।।

शुक्र एकादश भावमें हो तो उस वर्षमें मनुष्योंको सुवर्णका लाभ विजय पुत्रोंकी वृद्धि राजपक्षसे जय सुख शत्रुओंका नाश और मित्रोंकी वृद्धि हो ।।११।।

व्ययगतभृगुजे स्यात्सद्व्ययो वातपीडा रिपुजनप्रतिवादो
नेत्रयोश्चापि रोगः ।
भवति नृपभयं वै शोकमोहादिकष्टं
ज्वरवमनविकारी मृत्युतुल्यो नरश्च ।।१२।।

शुक्र द्वादश भावमें हो तो श्रेष्ठ काममें धनका खर्च हो वादीकी पीडा हो शत्रुओंके साथ विवाद नेत्रोंमें रोग और राजभय शोक मोहादि कष्ट ज्वर वमनका विकार मृत्युतुल्य मनुष्य होवे ।।१२।।

अथ शनिफलम्

मूर्त्तिस्थितो रविसुतः सुतलाभकारी
ह्युच्चस्थितः स्वगृहगश्च करोति वृद्धिम् ।
शेषेषु वैरिभयमाशु सवायुपीडां
जायांगकष्टमथ शोकविकारकारी ।।१।।

शनि वर्ष लग्नमें उच्चराशि अर्थात् तुलाराशिका होकर स्थित हो तो पुत्रका लाभ करता है और जो अपने भवनका अर्थात् मकर कुंभका हो तो शरीर पुष्ट करता है तथा और राशिका हो तो शत्रुभय वातपीडा स्त्रीको कष्ट शोक मोह करे ।।१।।

दिवानाथपुत्रो धनस्थो धनानां विनाशं विधत्ते कुटुंबाद्विरोधम् ।
प्रकुर्य्याच्च नेत्रोदरेषु प्रपीडां कफार्त्तिश्च वर्षे भवेत्सर्वदेहे ।।२।।

शनि द्वितीय भावमें हो तो उस वर्षमें धनका नाश और कुटुंबियोंसे विरोध हो और नेत्र उदरमें पीडा तथा सब शरीरमें कफका विकार हो ।२।।

रविसुतो भवतीह तृतीयगो रिपुविनाशकरो जयकृन्नृपात् ।
भवति भूधनलाभकरस्तदा स्वजनबंधुविरोधकरस्तदा ।।३।।

शनि तृतीय भावमें हो तो शत्रुका नाश राजासे विजय भूमि धनका लाभ तथा भाइयोंसे विरोध करे ।।३।।

बंधुस्थानगतो दिवाकरसुतः स्याद्धायने कष्टदो
भीतिं हानिमुपक्रमे च कुरुते नेत्रोदरे पीडनम् ।
बंधूनामपताडनं प्रकुरुते लोकापवादं तथा लोहाग्नेश्च भयं
पशोश्च मरणं हानिः कृषीणां तथा ।।४।।

शनि चतुर्थ भावमें हो तो उस वर्षमें कष्ट भय हानि तथा नेत्र उदरमें पीडा करे भाइयोंको क्लेश लोकमें निंदा तथा लोह अग्निसे भय और पशुओंका मरण खेतीमें हानि करे ।।४।।

सुतगतः सुतहानिकरः शनिर्भवति चोदरपीडनकष्टदः ।
विकलता बहुतापकरो भवेन्नृपभयं प्रकरोति जनेषु च ।।५।।

शनि पंचम भावमें हो तो पुत्रकी हानि हो उदरमें पीडा हो कष्ट हो विकलता अधिक संताप और राजभय हो ॥५॥

षष्ठस्थितो भूधनलाभकर्त्ता सूर्यात्मजो नृपसमं पुरुषं प्रकुर्यात् ।
धान्याम्बराणि बहुलानि ददाति नित्यं कीर्तेर्विवर्धनमथार्त्तिविनाशनं च ॥६॥

शनि षष्ठ भावमें हो तो भूमि और धनका लाभ हो तथा मनुष्य राजाके समान हो बहुतसे वस्त्र धान्यका नित्यही लाभ हो यशवृद्धि तथा रोगका नाश हो ॥६॥

जायास्थानगतो दिवाकरसुतः स्यादङ्गनापीडको
मार्गाद्भीतिकरः पशोश्च मरणं राज्याद्भयं व्यग्रता ।
क्लेशानां च विवर्द्धनं प्रकुरुते मिथ्यापवादं तथा
देहे वायुसमुद्भवाथ जठरे पीडा भवेद्धायने ॥७॥

शनि सप्तम स्थानमें हो तो उस वर्षमें स्त्रीको कष्ट हो, मार्गसे भय, पशुओंका मरण, राज्यसे भय, चित्तमें विकलता, क्लेश बढे, मिथ्या कलंक लगे शरीरमें वादीकी पीडा तथा उदरमें भी पीडा हो ॥७॥

निधनगो निधनं कुरुते शनिर्ज्वरविमर्दकफार्त्तिजनापदम् ।
नृपभयं धनहानिररेर्भयं भवति तापकरः पवनोदयः ॥८॥

शनि अष्टम स्थानमें हो तो मृत्यु करे ज्वरकी पीडा हो कफरोग हो मनुष्योंसे अपवाद हो राजासे भय धनकी हानि शत्रुसे भय चित्तमें संताप और वादीकी पीडा हो ॥८॥

भाग्योदयो भाग्यगतः शनिश्चेद्भूपार्थदः शत्रुविनाशनश्च ।
कीर्त्तिश्रियं मानमथापि दद्यात्सहोदराणां च भयार्त्तिकारी ॥९॥

शनि नवम भावमें हो तो भाग्यका उदय हो राजासे लाभ हो और शत्रुका नाश हो यश लक्ष्मी संतानकी वृद्धि हो तथा भाइयोंको भय और पीडा हो ॥९॥

गगनगः कृषिहानिकरः शनिः पशुभयं स्वजनोदरपीडनम् ।
नृपसमं मनुजं च धनागमं प्रकुरुते क्रयविक्रयलाभकृत् ॥१०॥

शनि दशम भावमें हो तो खेतीकी हानि पशुओंसे भय अपने भाइयों-के पेटमें पीडा करे और मनुष्यको राजाके समान करे तथा धनका लाभ व्यापारद्वारा बहुत करे ॥१०॥

लाभस्थितो भास्करसूनुरत्र हिरण्यगोभूमिरथाश्वलाभम् ।
अर्थागमं कीर्तिविवर्द्धनं च संतानपीडां च करोति वर्षे ॥११॥

शनि एकादश भावमें हो तो उस वर्षमें सुवर्ण गो भूमि रथ अश्व इनका लाभ हो और धनका लाभ कीर्तिकी वृद्धि तथा संतानको पीडा होवे ॥११॥

व्ययस्थानगो जायते चार्कपुत्रो व्ययो व्यग्रता क्लेशचिंतादिकष्टम् ।
रिपूणां विनाशो भवेदर्थनाशः शिरोर्त्यक्षिपीडा तदा हायनेऽस्मिन् १२॥

शनि द्वादश भावमें हो तो उस वर्षमें खर्च चित्तमें विकलता क्लेश और चिंता आदि कष्ट हो शत्रु और धनका नाश हो तथा शिर और नेत्रोंमें पीडा हो ॥१२॥

अथ राहुफलम्

तमो लग्नगो कामिनीनां च पीडा रिपोर्भीतिचिंता व्ययं व्यग्रताच ।
शिरोर्त्तिं च भूपाद्भयं मानभंगं तथा नेत्ररोगं करोतीह वर्षे ॥१॥

राहु वर्षके लग्नमें हो तो स्त्रीको पीडा शत्रुसे भय चिंता धन खर्च विकलता शिरमें पीडा राजासे भय मानका भंग और नेत्रोंमें रोग इस वर्षमें होवे॥१॥

जनापवादं च कुटुंबगश्चेत्तमस्तदा भूपभयं करोति ।
नेत्रोदरव्याधिभयार्त्तिदोषान्धनापहारं च भयं तथाऽब्दे ॥२॥

राहु द्वितीय भावमें हो तो उस वर्षमें उस मनुष्यकी लोगोंमें निंदा होवे राजासे भय हो नेत्र और पेटमें पीडा हो कोई भयसे पीडा हो तथा धनकी चोरी तथा भय होवे ॥२॥

शशिविमर्दकरश्च तृतीयगो धनसुतं नरराजसमं नरम् ।
प्रकुरुते पशुवाहनजं सुखं स्वजनपीडनमाशु करोत्यसौ ॥३॥

राहु तृतीय भावमें हो तो धन पुत्रका लाभ हो मनुष्य राजाके समान हो पशु तथा वाहनोंका सुख हो तथा अपने बंधुजनोंमें शीघ्र पीडा हो ॥३॥

हिमांशो रिपुस्तुर्यगो वाहनानां विनाशं तथा भूपपक्षाद्भयं च ।
कफार्त्तिं च कष्टं तथा वायुपीडां विदेशे भ्रमं हायनेऽसौ करोति ॥४॥

राहु चतुर्थ भावमें हो तो वाहनोंका विनाश तथा राजासे भय हो कफकी पीडा तथा वादीकी पीडा और विदेशमें इस वर्षमें भ्रमण हो ॥४॥

स्वबुद्धेर्विनाशं सुतस्थानगश्चेद्धिमांशो रिपुसंततेः पीडनं च ।
स्वकीयोदरे वायुभीतिं भयाप्तिं तथा सर्वदा क्लेशचिंतां करोति ॥५॥

राहु पंचम भावमें हो तो अपनी बुद्धिका नाश संतानको पीडा अपने पेटमें वादीकी पीडा तथा सदा क्लेश चिंता करे ॥५॥

रिपोर्विनाशो यदि सैंहिकेयः षष्ठस्थितः स्यान्नृपतुल्यकारी ।
गोभूहिरण्याम्बरलाभकारी धनाप्तिकृद्दुःखविनाशकश्च ॥६॥

राहु छठे भावमें हो तो शत्रुका नाश और मनुष्यको राजाके समान करे तथा गौ, भूमि, सुवर्ण, वस्त्र इन्होंकर लाभ धनकी प्राप्ति और दुःखका नाश करे ॥६॥

वातप्रमेहादि तथा नराणां गुह्येंद्रियार्त्तिं च तमो मुनिस्थः ।
विषाग्निपीडां च तथाङ्गनानां कष्टं करोतीह भयं नराणाम् ॥७॥

राहु सप्तम भावमें हो तो मनुष्योंको वातप्रमेहादिक गुदा और इंद्रियमें रोग हो विष और अग्निसे पीडा हो तथा स्त्रियोंको कष्ट और भय हो ॥७॥

छिद्रस्थितो मृत्युसमं मनुष्यं तमस्तथा भूपभयं करोति ।
ज्वरातिसारं च कफार्त्तिदोषं विषूचिकां वायुभयं नराणाम् ॥८॥

राहु अष्टम भावमें हो तो मनुष्यको मृत्युतुल्य कष्ट करे और राजसे भय ज्वर अतिसारकी पीडा कफका रोग हो तथा विषूचिका और वादीका भय हो ॥८॥

धर्मस्थितो धर्मविवर्द्धनं स्याज्जयं नृपाच्छत्रुविनाशनं च ।
भाग्योदयो धान्यधनागमं च करोति पीडां पशु बांधवेषु ॥९॥

राहु नवम भावमें हो तो धर्मकी वृद्धि राजासे जय और शत्रुका नाश होय तथा भाग्यका उदय और धन धान्यका लाभ हो और पशु तथा भाइयोंमें पीडा करे ॥९॥

सिंहीसुतो दशमगः क्रयविक्रयेषु लाभं नरं नृपसमं च करोति वर्षे।
भूपाज्जयं सततमंगलमाशु कुर्यात्कीर्त्तिश्रियं भवति वाहनहानि-
कारी ॥१०॥

राहु दशम भावमें हो तो उस वर्षमें व्यापारसे लाभ हो और मनुष्यको राजाके समान सुख मिले राजासे जय हो निरंतर मंगल कार्य होवे यश और लक्ष्मीकी प्राप्ति हो तथा वाहनोंका नाश हो ॥१०॥

लाभस्थितश्चेत्खलु सैंहिकेयो नरं नरेन्द्रेण समंकरोति।
हिरण्यगोभूधनसंचयं च शत्रुक्षयं पुत्रभयं तथैव ॥११॥

राहु एकादश भावमें हो तो मनुष्यको राजाके समान करे और सुवर्ण, भूमि, गौ, धन इनकी वृद्धि हो और शत्रुका नाश तथा पुत्रको भय हो ॥११॥

स्थानभ्रंशो भवति पवनस्योदयश्चेद्व्ययस्थः
सिंहीपुत्रो रिपुभयमथो मर्त्यमृत्युं विधत्ते।
शीर्षे कर्णे व्यथनमुदरे नेत्ररोगं नराणां
लक्ष्मीहानिः स्वजनकलहो कामिनीनां च पीडा ॥१२॥

राहु द्वादश भावमें हो तो स्थानभ्रष्ट वादीकी पीडा शत्रुसे भय मृत्यु-तुल्य कष्ट तथा शिर कानमें पीडा उदर और नेत्रोंमें रोग धनकी हानि और आपसमें कलह तथा स्त्रियोंको पीडा हो ॥१२॥

अथ केतुफलम्

शिखी लग्नगः स्याद्भयं व्यग्रता च रिपोर्भीतिचिन्ता भवेद्राज्यकष्टम्।
शिरोर्त्तिस्तथा मानभंगो जनस्य करोत्येव नेत्रे च योषित्सु पीडा ॥१॥

केतु वर्षके लग्नमें हो तो मनुष्यको भय और विकलता हो शत्रुसे भय चिन्ता तथा राजासे कष्ट हो शिरमें पीडा मान भंग हो नेत्र पीडा तथा स्त्रियोंको कष्ट हो ॥१॥

कुटुंबगश्चेद्यदि केतुरब्दे भूपाद्भयं हानिकरो धनानाम्।
नेत्रोदरव्याधिभयार्त्तिदोषान् जनापवादं प्रकरोति दुःखम् ॥२॥

केतु द्वितीय भावमें हो तो राजासे भय हो धनकी हानि नेत्र तथा पेटमें पीडा भय और दुःख हो तथा मनुष्योंमें निन्दा लडाईका दुःख होवे ॥२॥

यदि शिखी च तृतीयगृहस्थितः प्रकुरुते पशुवाहनजं सुखम् ।
धनसुतं नरराजसमं जनं स्वजनपीडनमाशु करोति वै ॥३॥

केतु तृतीय भावमें हो तो पशु और वाहनोंका सुख हो धन तथा पुत्रका लाभ हो मनुष्य राजाके समान हो और अपने भाइयोंको पीडा करे ॥३॥

चतुर्थे शिखी मानसे व्यग्रता स्यात्कफार्त्तिस्तथा वायुपीडा च दुःखम् ।
भयं वाहनेभ्यस्तथा भूपपक्षाद्विदेशं भ्रमं वत्सरेऽसौ करोति ॥४॥

केतु चतुर्थ भावमें हो तो उस वर्षमें चित्तमें विकलता हो कफ तथा वादीकी पीडा हो दुःख हो और वाहनोंका तथा राजपक्षसे भय हो और विदेशमें भ्रमण करावे ॥४॥

सुबुद्धेर्विनाशं सुतस्थानगश्चेच्छिखी सन्ततेः पीडनं हायनेऽस्मिन् ।
तथा सर्वदा क्लेशचिंता भयाप्ति स्वकीयोदरे वायुभीतिं विधत्ते ॥५॥

केतु पंचम स्थानमें हो तो उस वर्षमें अपनी बुद्धिका नाश संतानको पीडा हो और सर्वदा क्लेश चिंता तथा भय हो और पेटमें वातकष्ट हो ॥५॥

केतुर्यदा षष्ठगतस्तदा स्याद्रिपोर्विनाशो नृपतुल्यकारी ।
गोभूहिरण्याम्बरलाभदायी धनाप्तिकृद्दुःखसमूहकारी ॥६॥

केतु छठे भावमें हो तो शत्रुका नाश हो और उस मनुष्यको राजाके समान सुख करे तथा गौ, भूमि, सुवर्ण, वस्त्र इनका लाभ धनकी प्राप्ति और दुःखोंको नाश करता है ॥६॥

केतुर्यदा सप्तमगेहसंस्थितो वातप्रमेहादि विषाग्निपीडाम् ।
गुह्येन्द्रियार्त्तिं भयमङ्गनानां करोति पुंसां स्वदशांगतेऽपि ॥७॥

केतु सप्तम स्थानमें हो तो वात प्रमेह विष तथा अग्नि इनसे पीडा करे और अपनी दशामें गुदा तथा इंद्रियमें पीडा करे और स्त्रियोंको पीडा करे ॥७॥

मृत्युस्थितो मृत्युसमं मनुष्य केतुर्यदा भूपभयं करोति ।
ज्वरातिसारं च कफार्त्तिदोषं विषूचिकां वायुभयं नराणाम् ॥८॥

केतु अष्टम स्थानमें हो तो मनुष्यको मृत्युतुल्य कष्ट हो राजासे भय हो ज्वर अतिसार और कफकी पीडा हो विषूचिका रोग और बादीका भय हो ॥८॥

धर्मस्थितो धर्मविनाशकारी जयं नृपाच्छत्रुविनाशनं च ।
करोति पीडां पशुबांधवेषु भाग्योदयं धान्यधनागमं शिखी ॥९॥

केतु नवम स्थानमें हो तो धर्मका नाश करे राजासे जय शत्रुका नाश पशु और भाइयोंमें पीडा हो भाग्योदय धन और धान्यका लाभ हो ॥९॥

शिखी यदा राजगृहे स्थितः स्याद्व्यापारलाभं च करोति वर्षे ।
कीर्त्तिर्भवेद्वाहनहानिकारी भूपाज्जयं मङ्गलमाशु कुर्यात् ॥१०॥

केतु दशम भावमें हो तो उस वर्षमें व्यापारसे लाभ हो कीर्तिकी वृद्धि वाहनकी हानि, राजसे जय और मंगल हो ॥१०॥

लाभस्थितश्चेत्खलु केतुखेचरो नरं नरेंद्रेण समं करोति ।
शत्रुक्षयं पुत्रभयं तथा स्याद्धिरण्यगोभूधनसंचयं च ॥११॥

केतु एकादश भावमें हो तो मनुष्यको राजाके समान करता है और उस वर्षमें शत्रुका नाश पुत्रभय और सुवर्ण गौ भूमि तथा धन इनका संचय हो ॥११॥

व्ययस्थः शिखी व्यग्रतां संप्रधत्ते भयं शत्रुतो कामिनीनां च पीडा ।
भवेत्पीडनं कर्णनेत्रोदरेषु विवादं जनैः सार्द्धमब्दे करोति ॥१२॥

केतु द्वादश भावमें हो तो उस वर्षमें विकलता हो शत्रुसे भय हो स्त्रीको पीडा हो अपने कर्ण नेत्र और पेटमें पीडा तथा मनुष्योंके साथ लडाई होवे ॥१२॥

अथ मुंथासाधनम्

जन्मलग्नं समारभ्य वर्षे मुंथा भ्रमत्यसौ ।
एकैकराशिवृद्ध्याऽतस्तां वदाम्यनुपाततः ॥१॥
गतवर्षसमायुक्ते जन्मलग्ने विभाजिते ।
सूर्यैः शिष्टमिता मुंथा भवेन्मेषादितः क्रमात् ॥२॥

जन्मलग्नसे लेकर प्रति वर्षमें एक २ राशिकी वृद्धिसे मुंथा भ्रमण करती है इसलिये मैं उसे त्रैराशिककी विधिसे कहता हूं जन्मकालकी लग्नमें गतवर्षोंको जोडकर बारह १२ का भाग देनेसे शेष अंक संख्या मित मेषादिराशियोंकी गिनतीसे निश्चय मुंथा होती है ।।१।।२।।

अथ भावगतमुंथाफलम्

शत्रुनाशं सुताप्तिं च सम्मानं राज्यतो धनम् ।
देहसौख्यं विधत्ते वै मुंथा लग्नगता सुखम् ।।३।।
कीर्त्ति धनागमं मुंथा वित्तभावगता मुदम् ।
ददाति राज्यतो वित्तं तेजोवृद्धिं सुभोजनम् ।।४।।
युद्धात्कीर्त्ति च सम्मानं देहपुष्टिं सुखं तथा ।
सद्धर्मनिरतिं दत्ते मुंथा वै भ्रातृभावगा ।।५।।

वर्षलग्नमें मुंथा हो तो शत्रुनाश पुत्रकी प्राप्ति सन्मान राजासे धनका लाभ शरीर सुख आदि करे। दूसरे भावमें मुंथा हो तो कीर्त्तिवृद्धि धनका लाभ राज्यसे धनका लाभ तेजकी वृद्धि सुंदर भोजन आदि करे। तीसरे भावमें मुंथा हो तो युद्धमें जय तथा सन्मान शरीरपुष्टि सुख स्वधर्ममें प्रीति आदि करे ।।३।।४।।५।।

देहपीडां रुजोत्पत्तिं निन्दाव्यापारबन्धताम् ।
महादुःखं करोत्येवं मुंथा पातालभावगा ।।६।।
सुतभावगता मुंथा पुत्रबुद्धिधनागमम् ।
तेजोवृद्धिं प्रदत्ते च सौख्यं भार्य्यारतिं तथा ।।७।।

चतुर्थ भावमें मुंथा हो तो शरीरपीडा तथा रोगोत्पत्ति लोकमें निन्दा व्यापार में बाधा और महादुःख करे । पंचम भावमें मुंथा हो तो पुत्र धन वुद्धि इनकी प्राप्ति और तेजकी वृद्धि शरीरसुख स्त्रीसुख आदि फल करे ।।६।।७।।

दौर्बल्यं वैरिसंतापं कार्य्यबुद्धिविपर्ययम् ।
रोगोत्पत्तिं भयं चैव चौरान्मुंथा रिपुस्तथा ।।८।।
स्त्रीपुत्रबन्धुदुःखं च विधत्ते रिपुतो भयम् ।
धनधर्मविनाशं च मुंथा द्यूनगता सदा ।।९।।

षष्ठ भावमें मुंथा हो तो शरीरमें दुर्बलता शत्रुओंसे संताप बुद्धिका भ्रंश रोगोत्पत्ति चौरादिसे भय करे। सप्तम भावमें मुंथा हो तो स्त्री पुत्र भाई इनसे दु:ख शत्रुका भय धन धर्मका नाश आदि फल करे ।।८।।९।।

वित्तहानिं रिपोर्भीतिं विदेशगमनं तथा ।
रोगोत्पत्तिं करोत्येवं मुंथा रन्ध्रगता सदा ।।१०।।
पदाप्तिं धर्मवृद्धिं च पुत्रस्त्रीसौख्यमेव च ।
भाग्योदयं करोत्याशु मुंथा भाग्यस्थिता यशः ।।११।।

अष्टम भावमें मुंथा हो तो धनहानि शत्रुभय विदेश गमन रोग भय आदि करे। नवम भावमें मुंथा हो तो पदप्राप्ति धर्मवृद्धि पुत्र स्त्रीका सुख भाग्योदय यश आदि शुभ फल करे ।।१०।।११।।

सत्कर्मस्थिरतां मुंथा कीर्त्तिं विद्याधनागमम् ।
परोपकारितां चापि कर्मस्था कुरुते सुखम् ।।१२।।
लाभगा कुरुते मुंथा भोगभाग्योदयं मुदम् ।
आरोग्यतां मनस्तोषं राज्यतश्च धनागमम् ।।१३।।

दशम भावमें मुंथा होवे तब सत्कर्म स्थिरता कीर्ति विद्या धनकी वृद्धि परोपकार सुख करे। एकादश भावमें मुंथा होवे तब भोग विलास भाग्योदय हर्ष आरोग्यता चित्तकी प्रसन्नता तथा राज्यसे धनका लाभ करे ।।१२।।१३।।

व्ययाधिक्यं शरीरार्तिं कुरुते दुष्टसंगतिम् ।
द्रव्यधर्म्मविनाशं च मुंथा द्वादशभावगा ।।१४।।
कुभावे चेत्स्थिता मुंथा वर्षे रिष्टफलप्रदा ।
जपदानादिना कार्या शान्तिस्तस्या हितैषिभिः ।।१५।।

द्वादश भावमें मुंथा स्थित होवे तब अधिक खर्च शरीरकष्ट दुष्टसंगति धन धर्मका नाश करे। अशुभ स्थानमें यदि मुंथा स्थित होवे तब अरिष्ट करती है अत: जप दानादि शांति करना चाहिये ।।१४।।१५।।

अथ मुंथाविशेषफलम्

यदेन्थिहा सूर्यगृहे युता वा सूर्येण राज्यं नृपसंगमंच ।
दत्ते गुणानां परभोगमाप्तिं स्थानान्तरस्येति फलं दृशोपि ।।१६।।

जो मुंथा सूर्यकी राशिकी हो अथवा सूर्य करके युक्त हो तो राज्य सुख अर्थात् राजासे मिलाप कराती है तथा गुणोंकी और परमभोग विलास आदिका सुख कराती है ॥१६॥

चंद्रेण युक्तेन्दुगृहेऽथ दृष्टेन्दुनापि वा धर्मयशोभिवृद्धिम् ।
नैरुज्यसंतोषमतिप्रवृद्धि ददाति पापेक्षिततोऽतिदुःखम् ॥१७॥

जो मुंथा चंद्रमा करके युक्त हो अथवा चंद्रमाकी राशिकी हो अथवा चंद्रमा उसे देखता हो तो धर्म और यशकी वृद्धि निरोगता और बुद्धिकी वृद्धि अधिक संतोष हो। जो पापग्रह देखता हो तो अत्यन्त दुःखको देती ॥१७॥

कुजेन युक्ता कुजभे कुजेन दृष्टा च पित्तोत्थरुजं तनोति ।
शस्त्राभिघातं रुधिरप्रकोपं सौरीक्षिता सौरिगृहे विशेषात् ॥१८॥

जो मुंथा मंगलकरके युक्त हो मंगलकी राशिकी हो अथवा मंगल उसे देखता हो तो पित्तोत्पन्न रोगको विस्तार करती है और उस वर्षमें शस्त्रसे घाव तथा रुधिरपीडा होय और शनि देखता हो अथवा शनिकी राशिकी हो तो इस फलको विशेष करती है ॥१८॥

बुधेन शुक्रेण युतेक्षितापि तद्भेऽपि वा स्त्रीमतिलाभसौख्यम् ।
धर्मं यशश्चाप्यतुलं विधत्ते कष्टं च पापेक्षणयोगतः स्यात् ॥१९॥

जो मुंथा बुध शुक्र करके युक्त हो अथवा बुध शुक्र उसे देखते हों अथवा बुध शुक्रकी राशिकी हो तो स्त्री, बुद्धि, लाभ, सुख, धर्म और अधिक यशको करती है और जो पापग्रह करके देखी गई हो तो तथा उनके साथ हो तो कष्ट हो ॥१९॥

युतेक्षिता वा गुरुणा गुरुर्भे यदेन्थिहा पुत्रकलत्रसौख्यम् ।
ददाति हेमाम्बररत्नभोगं भूसेत्थशालादिहराज्यलाभः ॥२०॥

जो मुंथा गुरुके साथ हो गुरुकी राशिकी हो अथवा गुरु उसको देखता हो तो पुत्र स्त्रीका सुख हो और सुवर्णवस्त्र और रत्नकी लाभ कराती है और ग्रहसे इत्थशाल हो तो राज्यसे लाभ हो ॥२०॥

शनेर्गृहे तेन युतेक्षिता वा यदेन्थिहा वातरुजं विधत्ते ।
मानक्षयं वह्निभयं धनस्य हानिं च गुरुवेक्षणतः शुभाप्तिम् ॥२१॥

जो मुंथा शनिकी हो अथवा उसके साथ हो अथवा शनि उसे देखता

हो तो वातरोगको करती है और वर्षमें मानहानि हो अग्निसे भय धनकी हानि हो जो बृहस्पति देखता हो तो शुभफल हो ।।२१।।

तमोमुखेचेन्मुथहा धनाप्ति यशः सुखं धर्मसमुन्नतिं च ।
सितेज्ययोगेक्षणतः पदाप्तिं सुवर्णरत्नाम्बरलब्धयश्च ।।२२।।

जो मुंथा राहुके मुख में हो तो धनकी प्राप्ति यश, सुख औ इनकी वृद्धि हो और जो बृहस्पति शुक्र साथ हो अथवा देखते हों तो पदकी प्राप्ति और सुवर्ण रत्न तथा वस्त्र इनका लाभ हो ।।२२।।

तत्पृष्ठभागेन शुभप्रदा स्यात्तत्पुच्छभागे रिपुभीतिदुःखम् ।
पापेक्षणादर्थसुखस्य हानिश्चेज्जन्मनीत्थं गृहवित्तनाशः ।।२३।।

यदि मुंथा राहुके पृष्ठ भागमें हो तो शुभ फल नहीं देती है और जो पुच्छ भागमें अर्थात् केतुके साथ हो तो शत्रुसे भय और दुःख करती है और पापग्रह उसे देखते हों तो धन और सुखकी हानि हो और इसी प्रकार जन्ममें हो तो घर और धनका नाश हो ।।२३।।

अथ मुंथेशफलम्

मुंथाधिपो व्ययविनाशगतो विवीर्यो दुष्टग्रहस्त्वशुभवर्गगतोऽब्दकाले कष्टं नृणां परिकरोति भयं विवादं लोकैस्तथा निजजनैः कलहं नितान्तम् ।।२४।।

जो मुंथेश द्वादश और अष्टमस्थानमें बलकरके हीन हो अथवा पापग्रह पापग्रहके वर्ग में हो तो उस वर्षमें मनुष्योंको कष्ट भय मनुष्योंके साथ विवाद और अपने निजजनोंके साथ अत्यन्त कलह करता है ।।२४।।

भाग्ये च लाभे सहजे च केन्द्रे चेद्वर्षकाले मुथहाधिनाथः ।
करोति पुंसां विपुलं प्रतापं मैत्री नृपैः सम्मतिवर्द्धनं च ।।२५।।

---

१ भोग्या राहोर्लवास्तस्य मुखं पृष्ठं गता लवाः । ततः सप्तमभं पुच्छं विमृश्येति फलं वदेत् ।।१।। अर्थ–राहुके भोग्य अंश मुख है और गत अंश पृष्ठ है और उससे सातवीं राशि पुच्छ है अर्थात् केतुके साथ हो तो पुच्छ है ऐसा विचार कर फल कहे ।।२।। जन्ममें भी मुंथा देखते हैं यह ग्रंथान्तरका मत है ।।

जो वर्षकुंडलीमें मुंथेश नवम, लाभ, तृतीय और केंद्र में स्थित हो तो मनुष्योंका अधिक प्रताप हो राजाओंके साथ मित्रता और श्रेष्ठ बुद्धिकी वृद्धि हो ।।२५।।

अथ त्रिराशिपानयनम्

दिने त्रिराशिपाः ख्याता रविशुक्रार्किभार्गवाः ।
वागीशेन्दुबुधक्ष्माजानिशि मेषात्प्रकीर्त्तिताः ।।१।।
सिंहादिभे विलोमाश्च ज्ञातव्या वै त्रिराशिपाः ।
मंदभौमेज्यचंद्रास्तु नित्यं शेषेषु राशिषु ।।२।।

जो दिनमें वर्षका प्रवेश होय तो क्रमसे मेष आदि चार राशियोंके स्वामी सूर्य शुक्र शनि और शुक्र त्रिराशिप होते हैं और रात्रि में इन्हीं चारोंके वृहस्पति चंद्रमा बुध और मंगल क्रमसे त्रिराशिप होते हैं और सिंहसे वृश्चिक-तक पहले कहे हुए ग्रहके विपरीत त्रिराशिप होते हैं अर्थात् दिनमें जो त्रिराशिप पहले कहे हैं वह रात्रि में होते हैं और रात्रिके दिन में होते हैं। शेष राशियोंके त्रिराशिप रात और दिनमें एकसे क्रमसे शनि मंगल गुरु और चंद्रमा होते हैं ।।१।।२।।

त्रिराशिपचक्रम्

राशि.	मेष.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.		कुं.	मी.
दिन.	सू.	शु.	श.	शु.	वृ.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	वृ.	चं.
रात्रि.	वृ.	चं.	बु.	मे.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	वृ.	चं.

रविक्रांतभयो घस्रे दिनेशोऽब्दप्रवेशने ।
रात्रीशो निशिवेशे स्याच्चंद्राधिष्ठितराशिपः ।।३।।

जो दिनमें वर्षका प्रवेश होय तो जिस राशि में सूर्य होय उसी राशिका स्वामी दिनेश होता है । और जो रात्रि में वर्ष प्रवेश लग्न हो तो जिस राशिमें चंद्रमा वैठा होय उस राशिका स्वामी राशिपति होता है ।।३।।

अथ वर्षेशनिर्णयः

जन्मवर्षपती मुंथानाथो रात्रिपतिस्तथा ।
त्रिराशिपो दिनेशश्च वर्षेशज्ञानहेतवे ॥४॥
एकचक्रे समालिख्य पश्येत्तेषां बलाबलम् ।
बलाधिकस्तनुं पश्यन्सज्ञेयो वर्षपो बुधैः ॥५॥

जन्मलग्नका स्वामी वर्षलग्नका स्वामी मुंथाका पति और त्रिराशिपति रात्रिपति या दिनपति ये सब वर्षेश जाननेके निमित्त हैं ।

पांचोंको एक चक्रमें लिखकर उनके बलाबलको देखे इनमेंसे जो कोई बल में अधिक अर्थात् बलवान् होकर लग्नको सबसे अधिक दृष्टिसे देखता होय उसीको वर्षेश समझना चाहिये जो दृष्टिकी समता होय और पांचों ग्रहोंका बल बरावर होय तो मुंथेश वर्षपति हो सकता है और जो कोई भी ग्रह लग्नको न देखता होय तो सबमें जो बलवान् होय सो वर्षका पति होता है और जो बलमें सब बरावर होय तो दिन में प्रवेश होनेसे जिस राशिमें सूर्य होय उसका पति वर्षेश होता है, यदि रात्रिमें वर्षप्रवेश होय तो जिस राशिका चंद्र होय उसका स्वामी वर्षेश होता है । जो चंद्र पांचों ग्रहों में से किसीसे इत्थाशाल करता होय तो उसेही वर्षपति कहना चाहिये और इसके अभाव में जिस राशिमें चंद्रमा हो उसका स्वामी वर्षेश होता है ॥४॥५॥

अथ वर्षेशफलनिरूपणम्

व्ययारिरन्ध्रप्रमितांस्तु भावान्विहाय चेद्वर्षपतिः स्थितः स्यात् ।
परेषु भावेषु ददाति वित्तं सुखं च राज्याश्रयतो बलिष्ठः ॥६॥

वर्षेश छठे आठवें और बारहवें भावको छोडकर और किसी भावमें स्थित होय तो धन सुख और राज्यसे उत्तम सुख आदिको देता है ॥६॥

तत्रादौ रविफलम्

स्वोच्चादिगो वर्षपतिश्च भानुर्बली प्रतिष्ठां रिपुनाशमाशु ।
कीर्त्तिं विशालां सुतवित्तलाभं सुखं प्रभूतं कुरुते पदाप्तिम् ॥७॥
मध्यश्च पूर्वोक्तफलं च मध्यं ददाति कार्श्यं धनहानिमेवम् ।
नीचो विदेशे गमनं च दुःखं जनापवादं रिपुभीतिमाशु ॥८॥

वर्षेश सूर्य यदि बलवान् अपने उच्चराशिका हो तो सुख पुत्र और धनका लाभ सन्मान प्रतिष्ठा यश और शत्रुनाश आदि फलको करता है। मध्यबली होय तो पूर्वोक्त फल मध्यम लोगोंसे विरोध धनहानि और निर्बलताको करता है और नीचबल होय तो परदेश गमन धनहानि शत्रुभय आलस्य दुःख और निन्दा आदि फलको करता है ॥७॥८॥

अथ चंद्रफलम्

चंद्रेऽब्दपे स्वर्क्षगते धनाप्तिः स्त्रीपुत्रमित्रादिसुखं प्रतिष्ठा ।
मैत्री नवीना सुजनैश्च सार्धं स्याद्वै बलिष्ठे च शरीरपुष्टिः ॥९॥
मध्ये भवे दुर्बलता रुजाप्तिः सर्वं फलं पूर्वगतं च मध्यम् ।
नीचे शशाङ्के धनधान्यनाशो वातादिवृद्धिः कृशता शरीरे ॥१०॥

बलवान् चंद्रमा अपने राशिका होकर वर्षेश होय तो धन, स्त्री, पुत्र, मित्र आदिसे सुख प्रतिष्ठा पदलाभ, उत्तम जनोंसे मित्रता और शरीर पुष्टि होती है और जो मध्यम बली होय तो पूर्वोक्त फल मध्यम दुर्बलता और रोग आदि होता है। यदि जो नीचका होय तो वातरोगकी वृद्धि धन धान्यका नाश और शरीर में कृशता होती है ॥९॥१०॥

अथ भौमफलम्

भौमेऽब्दपे स्वर्क्षगते बलिष्ठे कीर्तिर्भवेच्छत्रुविनाशनं च ।
सेनापतित्वं द्रविणागमश्च मित्रादिसौख्यं सततं जनानाम् ॥११॥
मध्येऽतिरोगो रुधिरप्रकोपो निन्दाक्षती दुःखततिश्च तीव्रा ।
नीचे भवेच्छत्रुभयं च बुद्धिह्रासोऽग्निचौरातिभयं रुजाप्तिः ॥१२॥

जो बलवान् मंगल अपने राशिका होकर वर्षेश होय तो यश, शत्रुनाश, सेनापतित्व, प्रतिष्ठा, धनलाभ और मित्र आदिसे सुख होता है और जो मध्य बली होय तो रोग, रुधिरका विकार, निन्दा और हानि तथा तीव्र दुःख होता है। नीचका होय तो शत्रु, चोर, अग्निसे भय, निन्दा, बुद्धिका नाश, रोग आदि होवे ॥११॥१२॥

अथ बुधफलम्

स्वोच्चादिगे वर्षपतौ बुधे तु विद्यां पदाप्तिर्जयवित्तलाभः ।
सौख्यं च राज्याश्रयतो भवेद्वै कीर्त्तिर्बलिष्ठे विविधा प्रतिष्ठा ॥१३॥

मध्ये तु पूर्वोक्तफलं च मध्यं नीचे भवेद्‌बुद्धिविपर्ययश्च ।
धर्म्मार्थहानिः कलहश्च साकं मित्रैः सुतैश्चापि पराजयः स्यात्‌॥१४॥

बुध जो बलवान्‌ अपने उच्च राशिका होकर वर्षपति होय तो विद्या, लाभ, जय, धनलाभ, राज्यसन्मान, उत्तम पदका लाभ आदि करता है। और जो मध्यम होय तो पहिले कहा हुआ फल मध्यम करता है। यदि अधम होय तो बुद्धिविनाश, धन, धर्मका नाश, बलहानि, पराजय, मित्र तथा पुत्रोंमें विरोध होता है ॥१३॥१४॥

अथ गुरुफलम्‌

स्वोच्चस्थिते देवगुरौ बलिष्ठे कुटुंबसौख्यं धनकीर्त्तिलाभः ।
पुत्रप्रतिष्ठा निधिलाभ एव भवेत्सदा वर्षपतौ पदाप्तिः ॥१५॥
सर्वं फलं मध्यमिदं च मध्ये कृच्छ्रार्थलाभो रमणीवियोगः ।
नीचस्थिते वित्तसुसौख्यधर्म्मह्रासोभवेत्स्त्रीसुतबन्धुदुःखम्‌ ॥१६॥

गुरु जो बलवान्‌ होकर अपने उच्च राशिका होकर वर्षपति हो तो कुटुंबका सुख, धन, यश, पुत्र और गई हुई वस्तुका लाभ तथा प्रतिष्ठा आदि फल देता है। और मध्यम बली होय तो सब फल मध्यम होय, धनका कठिनतासे लाभ और स्त्रीका वियोग होवे और जो नीचका अधम बली होय तो धन सुख और धर्मकी हानि पुत्र स्त्री और कुबटुंबसे दुःख होता है ॥१५॥॥१६॥

अथ भृगुफलम्‌

शुक्रे ऽ दये स्वोच्चगते बलिष्ठे भूक्षेत्रलाभो वनिताविलासः ।
रोगप्रशान्तिर्द्रविणागमश्च राज्याद्भवेत्सौख्यमहर्निशं वै ॥१७॥
मध्येऽर्थ हानिर्बहुदुःखजातं भवेदिदं सर्वफलं च मध्यम्‌ ।
नीचस्थिते स्त्रीसुतमित्रवैरं निन्दा च नित्यं निजवृत्तिनाशः ॥१८॥

शुक्र जो बलवान्‌ अपने उच्च राशिका होके वर्षपति हो तो रोगनाश, सुख, भूमिलाभ, स्त्रीसे विलास, धनका लाभ और निरंतर राजासे सुखकी प्राप्ति करे। जो मध्यमबली होय तो यह सब फल मध्यम होय तथा धनहानि बहुत दुःख आदि करे। जो नीचका हो तो मनको दुःख निन्दा

जीविकानाश, स्त्री, पुत्र और मित्रोंसे विरोध आदिकी प्राप्ति करता है ।।१७।।१८।।

अथ शनिफलम्

मन्देऽब्दपे स्वोच्चगते बलिष्ठे नवीनभूक्षेत्रगृहादिलाभः ।
आरोग्यमारामतडागवापीविधौ व्ययःस्याच्च कुलप्रतिष्ठा ।।१९।।
मध्ये फलं सर्वमिदं च मध्यं कृच्छ्राद्धनाप्तिस्तु भवेद्धि निन्दा ।
नीचस्थिते हीनबले च मंदे कार्य्यार्थनाशो रिपुतो भयं स्यात् ।।२०।।
स्त्रीपुत्रमित्रैः स्वजनैश्च साकं नित्यं भवेद्वै कलहश्च दुःखम् ।
इत्थंफलं वर्षपतेर्मया हि प्राचीनरीत्या कथितं विविच्य ।।२१।।

शनैश्चर अपने उच्च राशिका बलवान् होकर वर्षपति हो तो नवीन भूमि गृह और धनका लाभ आरोग्यता, बाग, तालाव, बावडी आदिके बनानेमें धनका खर्च और कुलमें प्रतिष्ठा आदि करता है और मध्यम बली होय तो यह सब फल मध्यम और दुःखसे धनका लाभ तथा अनादर आदि फलको देता है। यदि नीच अर्थात् हीनबल होय तो कार्यका नाश धनकी हानि और शत्रुसे भय होय तथा स्त्री, पुत्र और मित्रोंसे विरोध तथा दुःखको करता है। इस प्रकार मैंने वर्षके स्वामियोंका फल प्राचीन रीतिसेही शास्त्रोंको देखकरके कहा है ।।१९।।२०।।२१।।

अथ मुद्दादशासाधनम्

जन्मर्क्षवृन्दैः क्रमशो गताब्दा युक्ता द्विहीना नवभिर्विभक्ताः ।
शेषाङ्कपा वै रविचंद्रभौमराह्विज्यमन्देन्दुजकेतुशुक्राः ।।१।।

गत वर्षोंमें अश्विनी आदि नक्षत्रसे गिनकर जन्मकालकी नक्षत्र संख्या जोड देवे फिर दो घटा करके उसमें नौका भाग देवे जो अंक शेष बचे उनके स्वामी क्रमसे सूर्य, चंद्रमा, मंगल, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु और शुक्र होते हैं अर्थात् एक बचे तो सूर्य, दो बचे तो चंद्रमा ऐसेही नव अंकतक क्रमसे जानना चाहिये ।।१।।

सूर्यस्य षट् चंद्रमसो दशैव भौमस्य सप्ताङ्गभुवो गुरुश्च ।
अद्रीन्दवश्चंद्रसुतस्य केतोः सप्तेह शुक्रस्य खयुग्मसंख्या ।।२।।
गोभूमयः सूर्यसूतस्य राहोर्नगेन्दवो वर्षगणा हि भुक्तेः ।
स्वभुक्तिवर्षाणिगुणैर्हतानि दिनानि वर्षे खचरस्य भुक्तिः ।।३।।

सूर्यकी भुक्ति छः वर्ष, चंद्रमाकी दश वर्ष, मंगलकी सात, गुरुकी सोलह, बुधकी सत्रह, केतुकी सात, शुक्रकी बीस, शनिकी उन्नीस और राहुकी अठारह वर्ष तक भुक्ति (भोग) है। उक्त वर्षोंमें उक्त ग्रहोंकी महादशा रहती है. अत्र जिस ग्रहकी वर्षदशा निकालनी होय उस ग्रहकी वर्षसंख्याको तीनसे गुणा करनेसे वर्षमें ग्रहकी दिनात्मक दशा होती है। उदाहरण–जैसे सूर्यकी दशा छः वर्षतक रहती है इस हेतु छःको तीनसे गुणा किया तो अठारह हुए बस वर्षमें अठारह दिनकी दशा सूर्यकी होती है, इसी क्रमसे आगे भी जानना चाहिये ।।२।।३।।

अथ विंशोत्तरीमहादशाचक्रम्

सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रहाः
६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०	वर्षसंख्या.

अथैकवर्षमध्ये ग्रहाणां दशाचक्रम्

सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रहाः
०	१	०	१	१	१	१	०	२	मासाः
१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०	दिनानि

अथ मुद्दादशाफलम्

सूर्ये राजकुलाद्भीतिः पीडा स्यात्पित्तसंभवा ।
विपत्तयश्च बंधूनां वित्तानां व्यय एव च ।।४।।

सूर्यकी मुद्दादशामें राजकुलसे भय पित्तसे पीडा भाइयोंकी विपत्ति और धनका खर्च हो ।।४।।

चान्द्रयां स्त्रीसुतभूलाभो वस्त्राभरणसंयुतम् ।
स्वपक्षवैरं कन्याथा जन्म निद्रारतिस्तथा ।।५।।

चंद्रमाकी दशामें स्त्री, पुत्र, भूमि इनका लाभ हो वस्त्र और आभूषणों-से युक्त हो अपने पक्षमें वैर हो कन्याका जन्म और निद्रामें रत हो ।।५।।

भौमे शत्रुविमर्दश्च विग्रहो बांधवैः सह ।
रक्तपित्तकृता पीडा परस्त्रीभिःसमागमः ।।६।।

मंगलकी दशा हो तो शत्रु मर्दन भाइयोंसे विग्रह रक्तपित्तकी पीडा और परस्त्रीसे समागम हो ।।६।।

बौध्यां बंधुसमायोगो मित्रधर्मसमागमः ।
प्रीतिर्जनस्य विपुला देहपीडा त्रिदोषजा ।।७।।

बुधकी दशा हो तो भाइयोंका समागम, मित्र और धर्मका समागम; मनुष्योंसे बहुत प्रीति और त्रिदोषपीडा हो ।।७।।

जैव्यां मानधनप्राप्तिर्देवब्राह्मणपूजनम् ।
कर्णरोगस्तथा वैरं स्वजनैश्च कलिर्भवेत् ।।८।।

गुरुकी दशा हो तो धन, मानकी प्राप्ति देव ब्राह्मणोंका पूजन कर्णरोग तथा सज्जनोंसे कलह और वैर होवे ।।८।।

शौक्यां स्त्रीसंगमो लाभो वस्त्राभरणसंयुतः ।
कौशल्यं महती कीर्त्तिर्धनलाभश्च जायते ।।९।।

शुक्रकी दशा हो तो स्त्रीके संगमसे लाभ हो वस्त्राभरणसे युक्त हो कौशल्य बहुत कीर्त्ति और धनका लाभ हो ।।९।।

शनैश्चर्य्यां देहपीडा पुत्रदारैश्च विग्रहः ।
तन्द्राश्रमो बुद्धिनाशो विदेशगमनं भवेत् ।।१०।।

शनिकी दशा हो तो देहमें पीडा, स्त्री पुत्रसे विग्रह, आलस्य परिश्रम बुद्धिका नाश और विदेश गमन हो ।।१०।।

स्वर्भानौ जायते दुःखं वधूतश्चात्मनो रुजः ।
देशान्तरेषु गमनं धननाशोऽरिविग्रहः ।।११।।

राहुकी दशामें वधूसे दुःख हो, शरीरमें रोग, देशांतरगमन और धनका नाश एवं शत्रुसे विग्रह हो ।।११।।

अथ मासदिनप्रवेशकालः

जन्मार्कांशेन तुल्यःस्याद्यदा तात्कालिको रविः।
तदा मासप्रवेशश्चेद्द्युप्रवेशः कलासमः ॥१॥

जब वर्तमान समयका स्पष्ट सूर्यका अंश जन्मकालके स्पष्ट सूर्यके अंशोंके समान होय तो मासका प्रवेश होता है और कलाके समान होय तो दिनका प्रवेश होता है ॥१॥

अथ मासप्रवेशानयनम्

कार्य्यं तु स्फुटपंक्तिस्थसूर्ययोरन्तरं मिथः।
पंक्त्यासन्नार्कगत्या च समं कृत्वा मिथो बुधः ॥२॥
हरेदंशादिकं तद्धि फलं ज्ञेयं दिनादिकम्।
स्फुटार्कांशादि शुध्येच्चेत्पंक्तिस्थे तु रवौ तदा ॥३॥
फलं विशोधयेत्सम्यग्मिश्रमाने बुधः सदा।
अन्यथा योजयेत्तत्र स्फुटार्कात्पंक्तिगे लघौ ॥४॥

स्पष्टसूर्य और पंचाङ्गका निकटवर्त्ती पंक्तिस्थ सूर्य इन दोनोंका आपस में अंतर करे और आसन्न पंक्तिके सूर्यकी गतिका आपसमें सर्वणित कर उस सर्वणित अंतरमें भाग देनेसे जो लब्धि मिले उसे निश्चय दिन घटी आदि फल जानना चाहिये। जो स्पष्ट सूर्यके अंश आदि पंक्तिवाले सूर्यके अंश आदिमें घटनेसे घट जावे तो पूर्वोक्त फलको मिश्रमानमें भली भांति घटावे और जो स्पष्ट सूर्यसे पंक्तिवाला सूर्य न्यून अर्थात् पंक्तिका सूर्य स्पष्ट सूर्यमें घट जावे तो पूर्वोक्त फलको मिश्रमान में जोड देवे तो दिन आदिक फल होता है ॥२॥३॥४॥

एवं दिनादिकं यत्स्यात्तदिष्टं परिकीर्त्तितम्।
उदयोक्तविधानेन लग्नं साध्यं बुधेन वै ॥५॥
तत्र मासप्रवेशः स्यादेवं कार्य्यं पुनः पुनः।
इत्थं द्वादशमासानां निवेशः साध्यतां बुधैः ॥६॥

इस प्रकार जो दिन, घटी आदि होय उन्हें इष्ट काल कहते हैं, फिर लग्न लानेका जो प्रकार पहले लिख आये हैं उसी रीतिसे पण्डित लोग

लग्नका साधन करै उसी लग्नमें मासका आरंभ होता है ऐसेही बार बार करना चाहिये इसी भांति विद्वानोंको बारह महीनोंके मास प्रवेश काल निकालना चाहिये ।।५।।६।।

अथ मासेशफलम्

महीशाद्धनाप्तिर्महामानलाभो मनःसंप्रमोदः सदा मानवानाम् ।
दिगंतप्रचारं यशः स्यान्नितांतं भवेन्मासनाथो यदा घस्रनाथः ।।१।।

सूर्य मासका पति हो तो राजासे धनकी प्राप्ति, महत्वकी वृद्धि, मनमें हर्ष और मनुष्योंका निरंतर देशांतरोंमें यशका प्रचार करे ।।१।।

मुक्ताहारश्वेतवस्त्रादिलाभः स्वीयाल्लोकाद्भूपतेः सौख्यप्राप्तिः।
वित्तं तीर्थासक्तियुग्मानवानां मासाधीशो यामिनीशो यदा स्यात् ।२।

चंद्रमा मासपति हो तो मोतियोंके हार श्वेत वस्त्रोंका लाभ आत्मीय जनोंसे और राजासे सुखकी प्राप्ति धनागम तथा तीर्थयात्रा आदि शुभ फल करे ।।२।।

द्रविणशोणितवस्तुसमागमो जययुतो हि ततः समराजिरे ।
भवति मंगलमंडितमंदिरं तनुभृतां यदि मासपमंगलः ।।३।।

मंगल मासपति हो तो धन एवं रक्त वस्तुकी प्राप्ति संग्राममें विजय और गृहमें सर्वत्र मंगल होवे ।।३।।

नानाविलासं वरवस्त्रलाभं धनागमं भूपतितो नितांतम् ।
कुर्यान्नराणां विपुलां च कीर्तिं मासाधिनाथः शशिजो नितांतम् ।।४।।

बुध मासपति हो तो अनेक प्रकारके भोग विलास एवं सुंदर वस्त्रोंका लाभ निरंतर राजासे धनका लाभ और मनुष्योंकी बहुत कीर्त्ति होय ।।४।।

वृंदारकार्चानिरतो नितांतं वंद्याभिभूताखिलशूरलोकम् ।
धत्ते पुमांसं धिषणाभियुक्तं मासाधिनाथो धिषणाभिधानः ।।५।।

गुरु मासपति हो तो देवकार्यमें निरत एवं सब लोक नमन करें और श्रेष्ठबुद्धि होय ।।५।।

निजजनाभिहतावरतान्वितो रतिविधानविचक्षणमानसः ।
हरति वारिगणे विहितोक्षितो भृगुसुते यदि मासपतौ स्थिते ।।६।।

शुक्र मासका पति हो तो अपने कुटुंबियोंमें अधिक आदर होय एवं कामक्रीडामें मन अधिक लगा रहै तथा जलक्रीडामें निरत रहै ।।६।।

नरेशात्सदा प्राप्तमानो नरः स्याल्लताभूरुहारोपणे सक्तचित्तः ।
विलासान्वितो वैरिमानप्रमाथी प्रभुत्वं प्रयातः शनिर्यत्र मासे ।।७।।

शनि मासेश्वर हो तो मनुष्य सदा राजासे मान प्राप्त करे तथा वृक्षादिक लगानेमें मन आसक्त रहै हास्य विलासमें मन रहै और शत्रुओंका मद दूर करनेमें समर्थ होवे ।।७।।

अथ तन्वादिभावगतमासेशफलम्

मासेश्वरो लग्नगतः करोति धनागमं संततिमेव सौख्यम् ।
कर्मोदयं बाहुबलप्रतापं शत्रुक्षयं स्यात्खलु राजमान्यम् ।।१।।

मासपति यदि लग्नमें हो तो धनका लाभ और संतानका सुख हो तथा भाग्योदय बाहुबलका प्रताप एवं शत्रुका नाश और राजासे मान प्राप्त होवे ।।१।।

मासेश्वरः कोशगतः करोति द्रव्यागमंबाहुबलप्रमोदम् ।
धनागमं वाहनमंदिराणि युक्तेक्षितो वा शुभखेचरेन्द्रैः ।।२।।

मासपति द्वितीय स्थानमें हो तो धनका लाभ बाहुबल हर्ष एवं सवारी मकान आदि शुभ ग्रहोंसे युक्त या दृष्ट होय तो यह सब होय ।।२।।

भवति मासपतिः सहजे यदा निजपराक्रमसिद्धिकरस्तदा ।
निजसहोदरदेहसुखं भवेत्खलखगैः सहितो न च वीक्षितः ।।३।।

मासपति तृतीय स्थानमें पाप ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट न होय तो निज पराक्रम द्वारा सिद्धि करे और भाईके शरीरमें सुख करे ।।३।।

मासे यदा मासपतिश्चतुर्थो भवेत्तदा वाहनहेमलाभः ।
सत्संगतिं ब्राह्मणदेवभक्तिं युक्तेक्षितो वा खलु सौम्यखेटैः ।।४।।

मासपति चतुर्थ स्थानमें शुभग्रहोंसे दृष्ट वा युक्त होय तो सवारी एवं सुवर्णका लाभ करे तथा सत्संगति ब्राह्मण देवतामें भक्ति आदि करे ।।४।।

मासेश्वरः पंचमगः करोति धनागमं संततिमेव सौख्यम् ।
स्त्रीणां विलासं रिपुरोगनाशं सुखार्थसिद्धिं तनुतेऽत्र मासे ॥५॥

मासपति पंचम भावमें हो तो धनागम और संतानका सुख करता है स्त्रीसे विलास शत्रु और रोगका नाश तथा सुख एवं अर्थकी सिद्धि करता है ॥५॥

मासेश्वरःशत्रुगतः करोति रोगागमं वाहनवित्तहानिः ।
शत्रूदयः कार्यकृता न सिद्धिः प्रमेहपीडा कथिता मुनीन्द्रैः ॥६॥

मासपति छठे भाव में हो तो रोग हो और वाहन एवं धनकी हानि हो तथा शत्रुका उदय कार्य्यका नाश और प्रमेह पीडा होवे ऐसा मुनिजन कहते हैं ॥६॥

कलत्रगो मासपतिर्यदा स्याज्जायाविलासं कुरुते सदाऽसौ ।
व्यापारसिद्धिं धनधान्यमुच्चैर्युक्तेक्षितश्चेत्खलु सौम्यखेटैः ॥७॥

मासपति सप्तम स्थान में शुभग्रहोंसे युक्त या दृष्ट हो तो स्त्रीका सुख करे व्यापार में सिद्धि करे तथा धान्यकी वृद्धि करे ॥७॥

मासेश्वरो मृत्युगतः करोति वपुःप्रणाशं बलबुद्धिनाशम् ।
रमावियोगं सुतबंधुखेदमितस्ततः संभ्रमणं करोति ॥८॥

मासपति अष्टम भावमें हो तो शरीरकी हानि बल बुद्धिकी हानि लक्ष्मी-का वियोग और पुत्र भाईको खेद तथा देश विदेशमें भ्रमण करे ॥८॥

मासेश्वरो भाग्यगतो नराणां भाग्योदयं धर्मविवर्धनं च ।
स्त्रीणां विलासं खलु मित्रलाभं संतान सौख्यं प्रकरोति नूनम् ॥९॥

मासपति नवम भाव में हो तो भाग्योदय तथा धर्मकी वृद्धि स्त्रीविलास मित्रलाभ और संतानसुख करता है ॥९॥

कर्मस्थितो मासपतिर्नराणां करोति संतानसुखंप्रतापम् ।
स्त्रीणां विलासं धनधान्यलाभं सर्वार्थलाभं कथितं मुनीन्द्रैः ॥१०॥

मासपति दशम भावमें हो तो पुत्रसुख प्रतापकी वृद्धि करे स्त्रियोंका विलास और धन धान्यका लाभ तथा सर्वार्थकी सिद्धि करे ऐसा मुनिजन कहते हैं ॥१०॥

लाभे भवेन्मासपतिर्नराणां यदा तदा स्याद्वितत्तं च लाभम् ।
कान्तासुखं सद्मसुखं विलासं युक्तेक्षितः सौम्यखगैः प्रमोदम् ॥११॥

मासपति लाभस्थानमें हो तो बहुतही लाभ करे स्त्रीका सुख घरका सुख विलास और हर्ष करे यदि शुभ ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो ॥११॥

व्ययस्थितो मासपतिः करोति धनव्ययं धान्यविनाशनं च ।
शिरोऽङ्गपीडां सुतसौख्यनाशं जायादिकष्टं रिपुविग्रहं च ॥१२॥

मासपति बारहवें भावमें हो तो धनका खर्च और धान्यका नाश करे मस्तकमें एवं शरीरमें पीडा और पुत्र सुखकी हानि तथा स्त्री आदिको कष्ट शत्रुका विग्रह करे ॥१२॥

अथ मासे भावगतमुंथाफलम्

शरीरेऽति सौख्यंसुतेभ्यः प्रमोदं सुखं कामिनीकेलिजं मित्रलाभम् ।
नरेशाद्धनाप्तिं यशोवृद्धिर्नित्यं नृणां लग्नगा मासवेशे विधत्ते ॥१॥

मासकुंडली में मुंथा लग्नमें हो तो शरीरमें सुख पुत्रोंसे हर्ष और स्त्रीके भोग विलासका सुख मित्रका लाभ एवं राजासे धनका लाभ तथा यशकी वृद्धि होवे ॥१॥

मतिं निर्मलां नित्यमिष्टान्नभोगं विनाशं रिपूणां नृपाद्वित्तलाभम् ।
सुहृद्भिः सुखं मुंथहा वित्तगा चेन्नराणां हि मासप्रवेशे विधत्ते ॥२॥

यदि मासप्रवेशमें मुंथा द्वितीय स्थान में हो तो श्रेष्ठ बुद्धि नित्य मिष्टान्न भोजन शत्रुओंका नाश राजासे धनका लाभ मित्रोंसे सुख करे ॥२॥

नानाविलासं स्वीयवर्गातिसौख्यं सुखं बंधुतः पौरुषस्यापि वृद्धिम् ।
धरेशाद्धनं विक्रमे मुंथहा चेन्नराणां हि मासप्रवेशे विधत्ते ॥३॥

मुंथा मासप्रवेश में तृतीय स्थान में हो तो नानाप्रकारके विलास अपने वर्गीय मनुष्योंसे सुख तथा भाईसे सुख पुरुषार्थकी वृद्धि राजासे धनका लाभ करे ॥३॥

शरीरे कृशत्वं द्विषद्भिश्च भीतिं धनाभावतां दुःखलब्धिं नितांतम् ।
कृषीणां भयं तुर्ययाते हि मुंथा नराणां हि मासप्रवेशे विधत्ते ॥४॥

मुंथा मास प्रवेश में चतुर्थ स्थान में हो तो शरीर में दुर्वलता शत्रुभय धनकी हानि निरंतर दु:ख खेतीका भय करे ।।४।।

सुपर्वाद्विजार्चारतिं बुद्धिवृद्धिं सुतेभ्योऽतिसौख्यं सदा कीर्तिलाभम् ।
अनेकार्थलब्धिं सुमुंथा सुतस्था नराणां हि मास प्रवेशे विधत्ते ।।५।।

मुंथा मास प्रवेशमें पांचवें भावमें हो तो शुभ पर्व में ब्राह्मणों की पूजा में चित्त हो और बुद्धिकी वृद्धि पुत्रोंसे सुख और कीर्तिका लाभ तथा अनेक कार्योंकी सिद्धि करे ।।५।।

स्वकार्ये रिपुत्वं नरेशाच्च भीतिं गतौजः शरीरं सुपुत्रार्तिवृद्धिम् ।
धनार्त्तिं च चौरादरिस्थानगेंथा नराणां हि मासप्रवेशे विधत्ते ।।६।।

मास प्रवेशमें मुंथा छठे भाव में हो तो अपने कार्य में शत्रुता राजासे भय शरीर में बलकी हानि पुत्रको पीडा चौरसे धनकी हानि करे ।।६।।

अनेकाधिपीडां कलत्रांगकष्टं विनाशं धनस्याथ लोके रिपुत्वम् ।
स्वदेहे च पीडां मदस्थानगेंथा नराणां हि मासप्रवेशे विधत्ते ।।७।।

मुंथा मास प्रवेशमें सप्तम भाव में हो तो अनेक प्रकारसे मानसी चिंता स्त्रीको कष्ट धनका नाश मनुष्योंसे शत्रुता और अपने शरीर में पीडा करे ।।७।।

बलेभ्यो धनेभ्यो भयं रोगवृद्धिं रिपुत्वं स्वकार्ये धनाभावमुग्रम् ।
सदा भार्व्यांचिता वसुस्थानगेंथा नराणां हि मासप्रवेशे विधत्ते ।।८।।

मुंथा मास प्रवेशमें अष्टम भाव में हो तो बल और धनका भय रोगकी वृद्धि अपने वृद्धिसे शत्रुता धनकी हानि सदैव चिंता मनुष्योंको होवे ।।८।।

प्रसिद्धं प्रचंडं स्वपुत्रादिशक्तिं सुखप्राप्तिमात्मीयलोकान्नितांतम् ।
महाभाग्यतामित्थिहा भाग्ययाता नराणां हि मासप्रवेशे विधत्ते ।।९।।

मुंथा मास प्रवेश में नवम भाव में हो तो प्रसिद्ध बहुत अपने पुत्रादिकोंकी शक्ति बढे अपने मनुष्योंसे सुख और महाभाग्यकी वृद्धि करे ।।९।।

महीशादभीष्टार्थलाभं नितान्तं स्वकीयातिसौख्यं कलत्राच्चतोषम् ।
शरीरे सुरूपं च मुंथा नभस्था नराणां हि मास प्रवेशे विधत्ते ।।१०।।

मुंथा मास प्रवेशमें दशम भाव में हो तो राजासे मनोरथकी सिद्धि निरंतर अपने कुटुंवसे सुख स्त्रीका सुख शरीर में सुंदरता मनुष्योंको होवे ।।१०।।

नरेशाद्धनाप्तिं च योषातितोषं परं स्वर्णभूषांबरं वित्तलाभम् ।
सुरार्चारतिं मुंथहा लाभयाता नराणां हि मासप्रवेशे विधत्ते ॥११॥

मुंथा मास प्रवेश में ग्यारहवें भाव में हो तो राजासे धनकी प्राप्ति स्त्रीका सुख उत्तम सुवर्णके गहनोंका तथा वस्त्र और धनका लाभ एवं देवताकी पूजा में प्रीति मनुष्योंको होवे ॥११॥

धरेशाद्भयं वैरितो भीतिमुग्रां व्ययं चातिलोलं कृषीणां भयं च ।
व्ययस्थानगा मुंथहा व्यग्रतां च नराणां हि मासप्रवेशे विधत्ते ॥१२॥

मुंथा मास प्रवेशमें द्वादश भाव में हो तो राजासे और शत्रुसे भय अतिशय खर्च खेतीमें भय और मन में व्यग्रता मनुष्योंको करे ॥१२॥

अथ

सूर्यादिग्रहाणां मासभावफलानि

तत्रादौ सूर्यफलम्

बहुचिन्तातुरोद्वेगः शिरोऽक्षिवक्त्रपीडनम् ।
बहुरोगोऽङ्गनापीडा मासे लग्नगते रवौ ॥१॥

सूर्य मास में लग्न में हो तो बहुत चिन्ता करके आतुरता चित्त में उद्वेग मस्तक नेत्र और मुख में पीडा तथा स्त्रीके शरीर में पीडा करे ॥१॥

रिपुराजानलैश्चौरैर्विवादे वा धनव्ययम् ।
कुटुंबकलहं चैव द्वितीये दिवसाधिपे ॥२॥

सूर्य मासमें द्वितीय भावमें हो तो शत्रुसे, राजासे, अग्निसे और चौरसे झगडेमें धनकी हानि और कुटुंबसे कलह होय ॥२॥

धर्मवृद्धिमनारोग्यं परमैश्वर्यसंपदाम् ।
स्त्रीपुत्रमित्रके सौख्यं तृतीयस्थे दिवाकरे ॥३॥

सूर्य मासमें तृतीय भावमें हो तो धर्मकी वृद्धि, रोगका नाश, धन संपदाकी वृद्धि स्त्री, पुत्र और मित्रको सुख करे ॥३॥

दुष्टस्वजनविद्वेषं भयं भूपालसंभवम् ।
चतुष्पदमनुष्याणां क्षयं सूर्ये चतुर्थगे ॥४॥

सूर्य मासमें चतुर्थ भावमें हो तो दुष्टोंसे और मित्रोंसे लडाई और राजासे भय तथा पशु और मनुष्योंको पीडा करे ॥४॥

पुत्ररुक्कामिनीकष्टं निर्धनं मतिमूढता ।
मित्रवैरं वपुःपीडा मासे पंचमगे रवौ ॥५॥

सूर्य मासमें पंचम भावमें हो तो पुत्रको कष्ट स्त्रीको कष्ट धनकी हानि बुद्धिकी हानि मित्रसे वैर देहमें पीडा करे ॥५॥

धनागमस्तथैश्वर्यं राजमान्यं रिपुक्षयम् ।
सौख्यं पुत्रकलत्रादौ षष्ठः प्रद्योतनो यदि ॥६॥

सूर्य मासमें छठे भावमें हो तो धनका लाभ ऐश्वर्यकी वृद्धि राजासे मान शत्रुनाश स्त्री पुत्रका सुख करे ॥६॥

बस्तिकुक्षिशिरोरोगं स्त्रीपीडा नगराटनम् ।
धनहानिप्रदो द्यूने भास्करो नियतो नृणाम् ॥७॥

सूर्य मासमें सप्तम भावमें हो तो गुदामें, उदरमें, मस्तकमें रोग स्त्रीको पीडा, परदेश यात्रा, धनकी हानि करे ॥७॥

बस्तिरुग्धनहानिश्च देहे रोगसमुद्भवः ।
पित्तरुक्नृपतेर्भीतिर्मासे चाष्टमगे रवौ ॥८॥

सूर्य मासमें अष्टम भावमें हो तो गुदामें रोग, धनकी हानि, शरीरमें रोग, पित्तकी पीडा और राजासे भय करे ॥८॥

जायापुत्रविवादं च मतिर्धर्मक्रियादिषु ।
चित्तोद्वेगाकुलं नित्यं नवमे तपनो यदि ॥९॥

सूर्य मासमें नवम भावमें हो तो स्त्रीपुत्रसे कलह धर्म कर्ममें चित्त लगे मनमें उद्वेगता करे ॥९॥

राजमुद्रादिकं सौख्यं शिवं भाग्यं सुखं धनम् ।
प्रख्यातकीर्तिविस्तारं करोति व्योमगो रविः ॥१०॥

सूर्य मासमें दशम भावमें हो तो राजधनसे सुख, कल्याण, भाग्योदय, सुख, धनका लाभ, विख्यात कीर्त्ति होय ॥१०॥

गोऽश्ववृषादिद्रव्याप्तिः प्रमोदोऽभीष्टवर्गतः ।
नृपप्रसादमारोग्यं मासे लाभगते रवौ ॥११॥

सूर्य मासमें ग्यारहवें भावमें हो तो गौ, अश्व, वृषभ और धनकी प्राप्ति मित्रवर्गोंसे हर्ष तथा आरोग्यता और राजाकी कृपा होवे ॥११॥

दृष्टिरुग्राजपीडा च विद्वेषं बंधुवर्गतः ।
देहे पित्तभवा पीडा सदा सूर्ये व्ययस्थिते ॥१२॥

सूर्य मासमें बारहवें भावमें हो तो नेत्रमें रोग राजपीडा भाइयोंसे शत्रुता शरीरमें पित्तकी पीडा करे। १२॥

अथ चंद्रफलम्

मासकाले विलग्नेंदौ कासश्वासादिपीडनम् ।
वदनाक्षिविकारं च पूर्णे[1] चंद्रे धनागमम् ॥१॥

चंद्रमा मासमें लग्नमें होय तो कास तथा श्वासादिका रोग मुख और नेत्रोंमें पीडा पूर्ण चंद्रमा लग्नमें हो तो धनका लाभ करे ॥१॥

इष्टस्वजनतः सौख्यं धनाप्तिः श्वेतवस्तुतः ।
द्वितीयस्थो यदा पूर्णचंद्रो मासविलग्नतः ॥२॥

चंद्रमा मासमें द्वितीय भावमें हो तो इष्ट मित्रोंसे लाभ होवे और पूर्ण चंद्रमा हो तो श्वेत वस्तुके व्यापारसे धनका लाभ करे ॥२॥

पराक्रमात्सुखप्राप्तिर्बन्धुस्वजनतः सुखम् ।
शरीरे चैवमारोग्यं तृतीये पूर्णचंद्रमाः ॥३॥

चंद्रमा मासमें तीसरे स्थानमें हो तो पराक्रमसे सुखकी प्राप्त और भाई मित्रोंसे सुख और पूर्ण चंद्र हो तो शरीरमें आरोग्य करे ॥३॥

---

१ क्षीणे चंद्रे खलु क्षीणं पूर्णे चेत्स्याच्छुभं फलम् ।
दत्ते क्रूरफलं चैव क्रूरयुक् दृष्टितः सदा ॥१॥

अर्थः–चंद्रमा क्षीण होय तो अशुभ फल देवे पूर्ण चंद्र हो तो शुभ फल देवे और क्रूरग्रहोंसे दृष्ट वा युक्त हो तो दुष्ट फल देवे तथा शुभ ग्रहोंसे दृष्ट युक्त हो तो शुभ फल देवे ॥१॥

सुहृद्बंधुकलत्रादिस्वल्पं चैव धनागमम् ।
गोमहिष्यादिलाभं च चतुर्थे यदि चंद्रमाः ॥४॥

चंद्रमा मासमें चतुर्थ भावमें हो तो मित्र, भाई और स्त्रीका सुख होवे थोरा धनका लाभ, गौ भैंस आदिका लाभ करे ॥४॥

सुतसौख्यं महोत्साहं शरीरे स्यात्सुखं भवेत् ।
करोति पंचमे चंद्रो यदि सौम्यखगेक्षितः ॥५॥

चंद्रमा मासमें पंचम भावमें हो तो सौम्य ग्रहोंसे दृष्ट हो तो पुत्रका सुख उत्सव शरीरमें सुख करे ॥५॥

वातश्लेष्मोद्भवा पीडा विद्वेषो बांधवैः सह ।
नृपचौरोद्भवा पीडा मासे षष्ठे स्थितः शशी ॥६॥

चंद्रमा मासमें छठे भावमें हो तो वात कफकी पीडा तथा भाइयोंसे वैर और राजासे चौरोंसे पीडा होय ॥६॥

स्त्रीसुखं नृपतेर्मानं लाभो ग्रामान्तरे भवेत् ।
वाणिज्यजनमार्गाच्च सप्तमे यदि चंद्रमाः ॥७॥

चंद्रमा मासके सप्तम भावमें हो तो स्त्रीका सुख राजासे मान व्यापार द्वारा मनुष्योंसे अन्यग्राममें लाभ करे ॥७॥

अष्टमे स्वल्पसंतापो द्रव्यनाशसमुद्भवः ।
श्लेष्मादिविविधा पीडा मासकाले निशापतौ ॥८॥

चंद्रमा मासके अष्टम भावमें हो तो चित्तमें साधारण संताप धनका नाश कफ आदिकी कई पीडा करे ॥८॥

नवमे धर्मवृद्धिश्च नृपमान्यं यशोदयम् ।
प्राप्यते विपुलान्भोगान्मासकाले सदा शशी ॥९॥

चंद्रमा मासके नवम भावमें हो तो धर्मकी वृद्धि राजासे मान यशका उदय और वहुतही भोग आदिकी प्राप्ति होय ॥९॥

लाभं सौख्यं प्रमोदं च राजपूजा रिपुक्षयम् ।
जायापुत्रादिकं सौख्यं मासे च दशमे शशी ॥१०॥

चंद्रमा मासके दशम भावमें हो तो लाभ सुख और हर्ष होय राजासे मान शत्रुका नाश स्त्री पुत्रका सुख करे ॥१०॥

श्वेतवस्त्रतुरंगादिलाभं भूपालसम्भवम् ।
श्वेतक्रय्याणकाल्लाभो मासे लाभस्थितः शशी ॥११॥

चंद्रमा मासके ग्यारहवें भावमें हो तो श्वेत वस्त्र, अश्व और राजासे लाभ तथा श्वेत वस्तुके व्यापारसे लाभ होय ॥११॥

द्रव्यव्ययो रिपूत्पत्तिर्नेत्ररुक्कलहो गृहे ।
दत्ते चित्तोद्भवा चिंता व्ययगो मासचंद्रमाः ॥१२॥

चंद्रमा मासके बारहवें भावमें हो तो धनका खर्च शत्रुकी उत्पत्ति नेत्रोंमें रोग घरमें कलह चित्तमें चिंता करे ॥१२॥

अथ भौमफलम्

मूर्ध्नि वक्त्राक्षिरोगं च कलहं च धनक्षयम् ।
रक्तपित्तप्रकोपं च मासे भौमो विलग्नगः ॥१॥

मंगल मासके लग्नमें हो तो मस्तकमें मुखमें नेत्रमें रोग तथा कलह धनका खर्च और रक्त पित्तका रोग होवे ॥१॥

वह्निचौरनृपादिभ्यो भयं च विभवव्ययम् ।
शोकं क्रूरा मतिः कष्टं धनस्थे भूमिनंदने ॥२॥

मंगल मासके द्वितीय भावमें हो तो अग्नि, चोर और राजासे भय धनका खर्च चित्तमें शोक क्रूरता कष्ट करे ॥२॥

नृपमान्यं धनप्राप्तिर्मित्रलाभं रिपुक्षयम् ।
गृहे महोत्सवो नित्यं तृतीये भूमिनंदने ॥३॥

मंगल मासके तृतीय भावमें हो तो राजासे मान-धनका लाभ मित्र लाभ शत्रुका नाश घरमें उत्सव सर्वदा होवे ॥३॥

देशाटनं च कष्टं च भयं भूपालसंभवम् ।
कुटुंबकलहं चैव यदि तुर्ये महीसुतः ॥४॥

मंगल मासके चतुर्थ भावमें हो तो विदेश यात्रा शरीरकष्ट राजभय और कुटुंबमें कलह करे ॥४॥

पुत्ररुक्कामिनीकष्टं निर्धनत्वं च मूढता ।
मित्रभीतिर्वपुः कष्टं मासे पुत्रे च भूमिजे ॥५॥

मंगल मासके पांचवें भावमें हो तो पुत्र तथा स्त्रीको कष्ट धनकी हानि बुद्धिभ्रम मित्रभय और शरीरमें कष्ट करे ॥५॥

इष्टस्वजनतः सौख्यं धनलाभं रिपुक्षयम् ।
प्रमोदं नृपतेर्मान्यं षष्ठस्थानगते कुजे ॥६॥

मंगल मासके छठे भावमें हो तो इष्ट मित्रसे सुख धनका लाभ शत्रुका नाश मनमें हर्ष और राजासे मान होय ॥६॥

जायाकष्टं तथा हानिः पीडा स्वात्मकलेवरे ।
देशभ्रंशभयं पुंसां कुर्याद्भौमस्तु सप्तमे ॥७॥

मंगल मासके सातवें भावमें हो तो स्त्रीको कष्ट तथा हानि शरीरमें पीडा देशत्याग और भय मनुष्योंको करे ॥७॥

रक्तपित्तप्रकोपं च गुह्यपीडा धनव्ययम् ।
विपत्तिमिष्टवर्गाच्च अष्टमस्थे धरासुते ॥८॥

मंगल मासके आठवें भावमें हो तो रक्तपित्तका रोग गुदामें पीडा धनका खर्च और मित्रपक्षसे आपत्ति होय ॥८॥

पापबुद्धिर्भवेत्पुंसामुग्रं च विभवव्ययम् ।
कलहं बंधुवर्गाच्च नवमस्थे धरात्मजे ॥९॥

मंगल मासके नवम भावमें हो तो पापमें बुद्धि मनुष्योंको बहुत धनका खर्च और बंधुओंमें कलह करावे ॥९॥

व्यापारे धनलाभश्च प्रसादं भूमिपालतः ।
तेजोवृद्धिस्तथा राज्यं यदि भूमिसुतोऽम्बरे ॥१०॥

मंगल मासके दशम भावमें हो तो व्यापार द्वारा धनका लाभ राजाकी प्रसन्नता और तेजकी वृद्धि करे ॥१०॥

जायासुखं पुत्रसुहृत्सुखं च तेजःप्रतापं विभवागमं च ।
शत्रुक्षयं भूमिपतेः प्रसादं लाभालये भूमिसुते नराणाम् ॥११॥

मंगल मासके ग्यारहवें भावमें हो तो स्त्री पुत्र मित्रका सुख तेजकी वृद्धि, प्रतापकी वृद्धि धनका लाभ, शत्रुका नाश और राजाकी कृपा मनुष्योंको होवे।११।

नेत्ररुक्च वपुःकष्टं धननाशं नृपाद्भयम् ।
सुतजायादितोद्वेगं मासे द्वादशगे कुजे ॥१२॥

मंगल मासके बारहवें भावमें हो तो नेत्रमें रोग शरीरकष्ट धनकी हानि राजासे भय और पुत्र स्त्रीसे उद्वेग करे ॥१२॥

अथ बुधफलम्

देहे सौख्यं धियो वृद्धिर्नृपमान्यं यशोदयम् ।
तेजोबलविवृद्धिं च मासे सौम्ये विलग्नगे ॥१॥

बुध मासके लग्नमें हो तो देहमें सुख बुद्धिकी वृद्धि राजासे मान यशका उदय और तेज बलकी वृद्धि करे ॥१॥

शरीरे निरुजे नित्यं द्रव्यलाभं नृणां भवेत् ।
इष्टस्वजनजं सौख्यं रौहिणीजे कुटुंबगे ॥२॥

बुध मासके द्वितीय भावमें हो तो शरीर सुख तथा नित्यही धनका लाभ और इष्ट मित्रोंसे सुख होय ॥२॥

लाभालाभं सुखं दुःखं शत्रुमित्रसमागमम् ।
मासकाले यदा चंद्रे तृतीये कुरुते नृणाम् ॥३॥

बुध मासके तीसरे भावमें हो तो लाभ और खर्च सुख और दुःख तथा शत्रु मित्रका मिलाप करे ॥३॥

मित्रबंधुस्त्रियाः सौख्यं स्वजनस्य समागमम् ।
राजमान्यं तथैश्वर्यं हिबुके चंद्रजे नृणाम् ॥४॥

बुध मासके चतुर्थ भावमें हो तो मित्र भाई और स्त्रीका सुख मित्रका समागम राजमान और ऐश्वर्यकी वृद्धि करे ॥४॥

जायापुत्रादिजं सौख्यं मानं भूपालसंभवम् ।
प्राप्यते विविधैश्वर्यं पंचमे शशिनंदने ॥५॥

बुध मासके पांचवें भावमें हो तो स्त्री पुत्रका सुख तथा राजासे मान और अनेक ऐश्वर्यका प्राप्ति करे ॥५॥

शत्रुवृद्धिं च हानिं च जायापुत्रादिजं भयम् ।
देहे वातोद्भवा पीडा कुर्यात्सौम्यस्तु शत्रुगे ॥६॥

बुध मासके छठे भावमें हो तो शत्रुकी वृद्धि धनहानि स्त्री पुत्रसे भय शरीरमें वातरोगकी पीडा करे ।।६।।

मार्गाल्लाभं तथा सौख्यं वाणिज्याच्च धनागमम् ।
चंद्रजः कुरुते नित्यं मासे सप्तमगे यदि ।।७।।

बुध मासके सप्तम भावमें हो तो मार्गसे व्यापार द्वारा सुख तथा धनका लाभ सर्वदा होवे ।।७।।

लाभं सौख्यं धनप्राप्तिं राजपूजां रिपुक्षयम् ।
विदधात्यष्टमे नित्यं मासे चंद्रात्मजो यदि ।।८।।

बुध मासके अष्टम भावमें हो तो लाभ और सुख तथा धनकी प्राप्ति राजासे मान और शत्रुका नाश नित्यही करे ।।८।।

धर्मबुद्धिं तथारोग्यं जायापुत्रादिजं सुखम् ।
चंद्रजः कुरुते नित्यं मासे तु नवमे यदि ।।९।।

बुध मासके नवम भावमें हो तो धर्ममें वुद्धि शरीरसुख स्त्री पुत्रका सुख नित्यही करे ।।९।।

वाणिज्याद्राज्यसंमानं धनलाभं रिपुक्षयम् ।
बंधुवृद्धिं सदा मासे सौम्यस्तु दशमे नृणाम् ।।१०।।

बुध मासके दशम भावमें हो तो व्यापार द्वारा राजासे मान धनका लाभ शत्रुका नाश और बंधुकी वृद्धि करे ।।१०।।

द्रव्यलाभं तथा रोग्यं पुत्रमित्रादिजं सुखम् ।
शुक्लवस्तुक्रयाल्लाभो लाभस्थाने यदा बुधः ।।११।।

बुध मासके ग्यारहवें भावमें हो तो धनका लाभ आरोग्यता पुत्र मित्र आदिका सुख श्वेत वस्तु व्यापार द्वारा लाभ होवे ।।११।।

स्वल्पलाभं व्ययं नित्यं बहुलं च नृपाद्भयम् ।
स्ववर्गकलहो नित्यं मासे सौम्ये व्ययस्थितः ।।१२।।

बुध मासके बारहवें भावमें हो तो अल्प लाभ और अधिक खर्च राजासे भय तथा कुटुंबमें कलह करे ।।१२।।

अथ गुरुफलम्

सौख्यं पुत्रकलत्राच्च स्वदेहे वातजं भयम् ।
लाभं भूपालसम्मानं देवेज्यो मासलग्नगः ।।१।।

गुरु मासके लग्नमें हो तो पुत्र स्त्रीसे सुख शरीरमें वातरोग धनका लाभ और राजासे सन्मान करे ।।१।।

धनलाभं तथा रोग्यं प्रमोदं बंधुवर्गतः ।
राजवर्गाच्च सम्मानं मासे धनगते गुरौ ।।२।।

गुरु मासके द्वितीय भावमें हो तो धनका लाभ शरीरसुख मित्रोंसे सुख और राजस्थानसे मान आदि फल करे ।।२।।

तृतीयेऽल्पसुखंलाभं सुहृद्बंधुधनागमम् ।
मासे नृणां स्त्रियाः सौख्यं राजसम्मान एव च ।।३।।

गुरु मासके तीसरे भावमें हो तो अल्प सुख मित्र भाई और धनका लाभ और स्त्रीको सुख तथा राजासे मान करे ।।३।।

जायापत्यसुहृत्सौख्यं नृपमान्यं धनागमम् ।
भूमिवाहनविद्याभिश्चतुर्थे मासगे गुरौ ।।४।।

गुरु मासके चतुर्थ भावमें हो तो स्त्री पुत्र मित्रका सुख राजासे मान धनका लाभ और पृथ्वीसे वाहनसे विद्यासे सुख होय ।।४।।

सद्बुद्धिर्मित्रसंप्राप्तिः सौख्यं लाभो भवेन्नृणाम् ।
इष्टमित्रकृतं सौख्यं पंचमस्थे सुरार्चिते ।।५।।

गुरु मासके पंचम भावमें हो तो श्रेष्ठ बुद्धि मित्रमिलाप, सुख और लाभ तथा मित्रसे सुख आदि फल करे ।।५।।

रिपुवृद्धिस्तथोद्वेगो धननाशो बलक्षयः ।
इष्टस्वजनविद्वेषः षष्ठे देवपुरोहिते ।।६।।

गुरु मासके छठे भावमें हो तो शत्रुकी वृद्धि, उद्वेग धनका नाश बलकी हानि और इष्टमित्रोंसे वैर होय ।।६।।

वाणिज्यं व्यवहाराच्च मार्गाच्चैव धनागमम् ।
स्त्रीसुखं राजसन्मानं सप्तमे सुरमंत्रिणि ।।७।।

गुरु मासके सप्तम भावमें हो तो मार्गसे व्यापार द्वारा धनका लाभ स्त्रीका सुख और राजासे सन्मान करे ।।७।।

धनव्ययमनारोग्यं कलहं मित्रवर्गतः ।
वियोगं च प्रवासं च ह्यष्टमस्थे सुरार्चिते ।।८।।

गुरु मासके अष्टम भावमें हो तो धनका खर्च शरीरमें रोग मित्रवर्गसे कलह और कुटुंबसे वियोग विदेश यात्रा होवे ।।८।।

धनलाभो नृपात्सौख्यं धर्मकार्य्यं भवेत्सदा ।
प्राप्नोति विविधान्भोगान्देवेज्ये नवमस्थिते ।९।।

गुरु मासके नवम भावमें हो तो धनका लाभ राजासे सुख सदैव धर्म-कार्य और अनेक प्रकारके भोगोंकी प्राप्ति करे ।।९।।

सत्कीर्तिर्भूभृतां मानं धनलाभं सुहृत्सुखम् ।
गेहे महोत्सवो नित्यं देवेज्यो दशमे यदि ।।१०।।

गुरु मासके दशम भावमें हो तो सुंदर कीर्ति राजासे मान धनका लाभ, मित्र सुख और घरमें महाउत्सव नित्यही करे ।।१०।।

आयुरारोग्यमैश्वर्यं जायापत्यसुहृत्सुखम् ।
नृणां चतुष्पदप्राप्ति देवेज्यो लाभगो यदि ।।११।।

गुरु मासके ग्यारहवें भावमें हो तो आयु आरोग्यताकी वृद्धि स्त्री पुत्र मित्रका सुख और मनुष्योंको पशुओंकी प्राप्ति करे ।।११।।

स्वजनैर्विग्रहो दुःखं क्षयोत्पत्तिर्धनव्ययः ।
प्रवासो नृपतेर्भीतिर्देवेज्ये व्ययसंस्थिते ।।१२।।

गुरु मासके बारहवें भावमें हो तो अपने मनुष्योंसे विग्रहशरीरमें क्षयका दुःख धनका खर्च और विदेश यात्रा तथा राजभय हो ।।१२।।

अथ शुक्रफलम्

सौख्यं लाभं प्रमोदं च कुलवृद्धिर्भवेन्नृणाम् ।
मानं भूमिपतेर्मासे दैत्येज्यो लग्नगो यदि ॥१॥

शुक्र मासके लग्नमें हो तो सुख लाभ हर्ष कुलकी वृद्धि और राजमान मनुष्योंको करे ॥१॥

धनलाभं सुहृद्वृद्धिः स्त्रीसुखं शत्रुसंक्षयम् ।
कांतिवृद्धिर्नृणां मासे दैत्येज्यो धनगो यदि ॥२॥

शुक्र मासके द्वितीय भावमें हो तो धनका लाभ मित्रोंकी वृद्धि स्त्रीसुख शत्रुनाश और शोभाकी वृद्धि करे ॥२॥

तृतीयेऽल्पसुखं पुंसां धनव्ययउपद्रवः ।
विवादं स्वजनैः सार्द्धं मासे दैत्यपुरोहिते ॥३॥

शुक्र मासके तृतीय भावमें हो तो अल्पसुख धनका खर्च और अपने मनुष्योंके साथ विवाद होय ॥३॥

नृपमान्यं तथैश्वर्यमारोग्यं विभवागमम् ।
मित्रस्वजनजं सौख्यं मासे तु हिबुके भृगौ ॥४॥

शुक्र मासके चतुर्थ भावमें हो तो राजासे मान, ऐश्वर्यकी वृद्धि आरोग्यता धनका लाभ स्वजन और मित्रोंका सुख होय ॥४॥

जायापुत्रादिकं सौख्यं सद्बुद्धिर्विभवागमम् ॥
तंत्रोपदेशे कौशल्यं पंचमे भृगुनंदने ॥५॥

शुक्र मासके पंचम भावमें हो तो स्त्री पुत्रका सुख अच्छी बुद्धि और धनका लाभ तंत्रविद्याके उपदेशमें कुशलता करे ॥५॥

वातश्लेष्मभवा बाधा क्षयोत्पत्तिर्धनव्ययम् ।
नृपाद्भयं गृहे कष्टं मासे षष्ठगते भृगौ ॥६॥

शुक्र मासके छठे भावमें हो तो वातकफकी पीडा क्षयरोगकी उत्पत्ति धनका खर्च राजासे भय और घरमें कष्ट होय ॥६॥

दयितापुत्रजं सौख्यं वाणिज्याद्विभवागमम् ।
मार्गाल्लाभं प्रमोदं च सप्तमे भृगुजे नृणाम् ॥७॥

शुक्र मासमें सप्तम भवनमें हो तो स्त्री पुत्रका सुख व्यापारसे धनका लाभ और मार्गसे लाभ और हर्ष होय ।।७।।

अल्पलाभमनारोग्यं जायापुत्रादिपीडनम् ।
धर्मनाशं प्रवासश्च भृगुपुत्रेऽष्टमस्थिते ।।८।।

शुक्र मासके अष्टम भावमें हो तो स्वल्प लाभ शरीरमें रोग, स्त्री पुत्रको पीडा, धर्मका नाश और विदेश गमन करे ।।८।।

शरीरे चैव ह्यारोग्यं सद्बुद्धिविभवागमम् ।
पुत्रजायादिकं सौख्यं नवमे भृगुजे नृणाम् ।।९।।

शुक्र मासके नवम भावमें हो तो शरीरमें आरोग्यता उत्तम बुद्धि धनका लाभ और पुत्र स्त्रीका सुख होय ।।९।।

नृपमानं सुहृत्सौख्यं धनलाभं रिपुक्षयम् ।
सर्वारम्भाः प्रसिद्ध्यन्ति दैत्येज्ये दशमे नृणाम् ।।१०।।

शुक्र मासके दशम भाव में हो तो राजासे मान मित्रका सुख धनका लाभ शत्रुका नाश और कार्योंकी सिद्धि होवे ।।१०।।

जलमार्गाद्धनप्राप्तिस्तथा शुभक्रयाणकात् ।
प्रियागमस्तथा सौख्यं लाभगे भृगुनन्दने ।।११।।

शुक्र ग्यारहवें भाव में हो तो जलके मार्गसे धनकी प्राप्ति तथा शुभ वस्तुके व्यापारमें लाभ प्रियजनोंका समागम और सुख करे ।।११।।

मित्रस्वजनविद्वेषः सन्मार्गे विभवव्ययः ।
निःसंगत्वं प्रवासं च द्वादशे भृगुजे नृणाम् ।।१२।।

शुक्र मासके बारहवें भाव में हो तो मित्र तथा भाइयोंसे वैर अच्छे काम में खर्च साथका छूटना और विदेश गमन करे ।।१२।।

अथ शनिफलम्

कफमारुतकोपं च शिरोजठरपीडनम् ।
इष्टद्वेषं वक्त्रपीडां मासे लग्नगते शनौ ॥१॥

शनि मासके लग्न में हो तो कफ वातकी पीडा शिर पेट में पीडा और मित्रसे वैर तथा मुख में पीडा करे ॥१॥

पीडा वक्त्रे तथा नेत्रे धननाशो नृपाद्भयम् ।
पुत्रजायादिकष्टं च द्वितीये रविनन्दने ॥२॥

शनि मासके द्वितीय भाव में हो तो मुख में और नेत्र में पीडा राजासे भय स्त्री और पुत्रादिकको कष्ट और धनका नाश करे ॥२॥

सर्वदुःखादिमोक्षं च राजमानं धनागमम् ।
मासकाले यदा सौरिस्तृतीये कुरुते नृणाम् ॥३॥

शनि मासके तृतीय भावमें हो तो संपूर्ण दुःख छूट जाय राजासे मान धनका लाभ मनुष्योंको करे ॥३॥

मातृपक्षे भवेत्कष्टं प्रवासं च धनक्षयम् ।
असंतोषो राजपीडा चतुर्थे रविनन्दने ॥४॥

शनि मासके चतुर्थ भाव में हो तो माताके कुल में कष्ट विदेश गमन धनका नाश तृष्णा और राजभय आदि करे ॥४॥

जायापुत्रसुहृत्कष्टं दुष्टबुद्धिर्धनक्षयम् ।
उदरे वातपीडा च पंचमे रविनन्दने ॥५॥

शनि मासके पंचम भाव में हो तो स्त्री पुत्र मित्रको कष्ट बुद्धिका नाश धनक्षय और पेट में बादीकी पीडा होय ॥५॥

देहे सौख्यं द्रव्यवृद्धिः प्रसादो भूमिपालतः ।
स्त्रीपुत्रजनितं सौख्यं मासे षष्ठगते शनौ ॥६॥

शनि मासके छठे भाव में हो तो शरीर सुख द्रव्यकी वृद्धि, राजाकी कृपा स्त्री पुत्रका सुख करे ॥६॥

सततं गमने भीतिः सुहृत्कष्टं धनक्षयम् ।
प्रवासं शत्रुतो भीतिः सप्तमे रविनंदने ॥७॥

शनि मासके सप्तम भाव में हो तो गमन में भय मित्रको कष्ट धनका नाश विदेश यात्रा और शत्रुसे भय होय ॥७॥

रोगपीडा महाव्याधिः पुत्रजायादिपीडनम् ।
व्यसनं द्रव्यहानिश्च मासे तु चाष्टमे शनौ ॥८॥

शनि मासके अष्टम भाव में हो तो शरीरमें रोग व्याधि स्त्री पुत्रको पीडा दुर्व्यसन धन हानि इतने फल करे ॥८॥

जायापुत्रसुहृत्कष्टं धननाशं नृपाद्भयम् ।
दुर्मतिः पापबुद्धिश्च नवमे भास्करात्मजे ॥९॥

शनि मासके नवम भाव में हो तो स्त्री पुत्र मित्रको कष्ट धनहानि राजभय बुद्धिभ्रंश और पाप में वृद्धि होय ॥९॥

व्यापाराद्धनहानिश्च भयं भूपालसंभवम् ।
सुखे दैन्यं प्रवासश्च दशमे रविनन्दने ॥१०॥

शनि मासके दशम भाव में हो तो व्यापारद्वारा धनकी हानि राजासे भय शरीर में दीनता और प्रदेश यात्रा होय ॥१०॥

द्रव्यागमं तथैश्वर्य्यमारोग्यं योषितां सुखम् ।
शूरत्वं नृपतेर्लाभो मासे लाभगते शनौ ॥११॥

शनि मासके ग्यारहवें भावमें हो तो धनका लाभ ऐश्वर्यकी वृद्धि आरोग्यता स्त्रियोंका सुख शूरता और राजासे लाभ होय ॥११॥

पादाक्षिहृदये पीडा द्रव्यनाशं नृपाद्भयम् ।
कलहं बंधुवर्गादौ कुर्यान्मंदो व्ययस्थितः । १२॥

शनि मासके बारहवें भावमें हो तो पगमें नेत्र में छाती में पीडा धनका नाश राजभय और कुटुंब में कलह करे ॥१२॥

अथ राहुफलम्

देहे मरुत्कृता पीडा कलहं विभवक्षयम् ।
पुत्रमित्रादिकं कष्टं राहौ मासविलग्नके ॥१॥

राहु मासके लग्नमें हो तो शरीरमें वात पीडा कलह धनका नाश और पुत्र मित्र आदिकोंको कष्ट करे ॥१॥

धनव्ययं तथा रोगं चिंता बस्त्यादिपीडनम् ।
वक्त्रलोचनपीडा च धनस्थे सिंहिकासुते ॥२॥

राहु मासके धनस्थानमें हो तो धनका खर्च देह में रोग चिंता गुदामें पीडा और मुख तथा नेत्र में पीडा करे ॥२॥

राजमानं तथैश्वर्यमारोग्यं विभवागमम् ।
शत्रुक्षयं सुहृत्सौख्यं राहौ मासे तृतीयके ॥३॥

राहु मासके तृतीय भाव में हो तो राजासे मान ऐश्वर्यकी वृद्धि आरोग्यता धनका लाभ शत्रुनाश और मित्रसे सुख करे ॥३॥

चिंता दुःखं प्रवासश्च प्रवादः स्वजनैः सह ।
चतुष्पदाः क्षयं यांति राहुस्तुर्यगतो यदि ॥४॥

राहु मासके चतुर्थ भाव में हो तो चिंता दुःख प्रवासगमन मित्रों से विवाद और पशुओंका नाश हो यह फल करे ॥४॥

पुत्रादिभ्यो महापीडा दुर्मतिर्बंधुविग्रहः ।
नियतं जठरे पीडा सैंहिकेयो तु पंचमे ॥५॥

राहु मासके पांचवें भाव में हो तो पुत्रादिकोंको पीडा दुर्मति भाईसे विग्रह और उदर में पीडा करे ॥५॥

नृपप्रसादमारोग्यं धनलाभो रिपुक्षयम् ।
कलत्रपुत्रजं सौख्यं मासे षष्ठे विधुंतुदे ॥६॥

राहु मासके छठे भाव में हो तो राजाकी प्रसन्नता शरीरमें सुख धनका लाभ शत्रु नाश और स्त्री पुत्रका सुख करे ॥६॥

प्रवासं पीडनं चांगे स्त्रीकष्टं पवनोत्थरुक् ।
कटिबस्तौ भवेत्पीडा सैंहिकेये च सप्तमे ॥७॥

राहु मासके सप्तम भाव में हो तो विदेश वास देह में पीडा स्त्रीको कष्ट वातरोग और कमर तथा गुदा में पीडा करे ।।७।।

धनव्ययं तथा रोगं विवादो बंधुभिः सह ।
स्त्रीकष्टश्च प्रवासश्च राहुरष्टमगो यदि ।।८। ।

राहु मासके अष्टम भाव में हो तो धनका खर्च देह में रोग भाइयोंसे विग्रह स्त्रीको कष्ट और विदेशमें वास करे ।।८।।

विद्वेषश्च वपुःपीडा दैन्यं राजभयं भवेत् ।
धर्मकार्ये विलंबश्च राहुर्धर्मगतो यदि ।।९।।

राहु मासके नवम भावमें हो तो वैर देहमें पीडा दीनता राजासे भय और धमकार्यमें विलंव इतने फल करे ।।९।।

भूमिनाशो भयं नित्यं देहपीडा धनक्षयः ।
इष्टस्वजनविद्वेषं राहौ दशमसंस्थिते ।।१०।।

राहु मासके दशम भावमें हो तो पृथिवीकी हानि भय देहमें पीडा धनका नाश और इष्ट मित्रसे वैर होय ।।१०।।

शरीरारोग्यमैश्वर्यं स्त्रीसुखं विभवागमम् ।
संकीर्णवर्णतो लाभो राहुर्लाभगतो यदि ।।११।।

राहु मासके एकादश भावमें हो तो शरीरसुख ऐश्वर्यवृद्धि स्त्रीसुख धनका लाभ और नीच वर्णसे लाभ होय ।।११।।

धनव्ययं च कष्टं च राजपीडा रिपूदयः ।
जायापीडा भवेन्नित्यं स्वर्भानुर्द्वादशे यदि ।।१२।।

राहु मासके बारहवें भावमें हो तो धनका खर्च शरीरकष्ट राजासे पीडा शत्रुका उदय स्त्रीको पीडा करे ।।१२।।

इत्येवं हायनफलं संक्षेपेण समीरितम् ।
ग्रंथान्तराद्विशेषोऽपि विज्ञेयः प्राज्ञपुंगवैः ।।१३।।

यह संक्षेपसे वर्षफल मैंने कहा है श्रेष्ठ बुद्धिमान् विद्वान् अन्य ग्रंथोंद्वारा विशेष फल जान लेवें ।।१३।।

ज्योतिःशास्त्रानुसारेण कृतो हायनभास्करः ।
अनेन प्रीयतां देवो गिरिजापतिरव्ययः ।।१४।।

ज्योतिष शास्त्रके अनेक ग्रंथोंके आधारसे मैंने यह "हायनभास्कर" ग्रंथ किया है इससे अविनाशी भगवान् सदाशिवजी प्रसन्न हो ।।१४।।

ग्रंथकर्तुः प्रशस्तिः

पुरा बभूवात्र वसिष्ठनामा मुनिस्तनूजो नलिनासनस्य ।
श्रीरामचंद्रस्य पुरोहितोयः श्रीयोगवासिष्ठमवोचदस्मै ।।१।।

पहले ब्रह्मदेवके वसिष्ठनामा पुत्र हुये जो कि श्रीरामचंद्रजीके कुल-पुरोहित भये और उनको योगवासिष्ठका उपदेश किया ।।१।।

एतस्य वंशे प्रथितो भवानीप्रसादगौडद्विजवर्य्य आसीत् ।
ग्रामे तु धौलाख्य उरुप्रसिद्धे श्रीबाणगंगातटमत्स्यदेशे ।।२।।

उन महर्षिके वंशमें आदि गौडब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ भवानीप्रसाद नामक विद्वान् मत्स्यदेशमें श्रीबाणगंगाके तटपर अतिप्रसिद्ध धौलानाम ग्राममें प्रकट होते भये ।।२।।

अस्याभवद्रामकुमारनामा पुत्रः पवित्रो बुधमाननीयः ।
विद्यार्कविद्योतितचित्तपद्मो यः शंभुभक्त्या दिवसाननैषीत् ॥३॥

उन भवानीप्रसादजीके शुद्ध चित्त विद्वानोंमें मान्य विद्यारूपी सूर्यसे खिला है चित्तरूपी कमल जिनका ऐसे रामकुमारनामक पुत्र हुये जो सदाकाल सदाशिवजीकी भक्ति करके आयुको शेष करते हुये ॥३॥

बभूव तस्यापि सुतः स लक्ष्मीनारायणाख्योद्विजदेवभक्तः ।
अयं सदा शंकरपादपद्मसपर्यया स्वं नयते च कालम् ॥४॥

उन विद्वान्के द्विज देवताओंका भक्त लक्ष्मीनारायणनामक पुत्र हुये जो सदाकाल सदाशिवजीके चरणकमलकी सेवा करके अपने कालको व्यतीत करते हैं ॥४॥

चक्रे हायनभास्करं स विदुषां प्रीत्यै महासुंदरं
मात्सर्यं परिहाय पश्यतु जनो निर्दोषमेतं मुहुः ।
ये निन्दंति खला विदन्ति न गुणं ते वै यथा सैरिभाः
गंधं तामरसस्य नैव हि विदुस्तेनालिनां का क्षतिः ॥५॥

सो वह लक्ष्मीनारायण विद्वानोंकी प्रीतिके वास्ते अति सुंदर इस "हायनभास्कर" ग्रंथको करते भये निर्दोष इस ग्रंथको मत्सरता छोडकरके मनुष्य देखें और जो दुष्ट जन हैं वे यदि निंदा भी करें तो कुछ क्षति नहीं जैसे भैंसा कमलपुष्पकी गंधको नहीं जाने तो उससे भ्रमरोंकी क्या हानि है ॥५॥

सप्ताङ्गाङ्कहिमांशुभिः परिमिते वर्षे शुभे वैक्रमे माघे मासि
वसन्तजिह्मगतिथौ श्रीमज्जयाख्ये पुरे । ग्रंथं हायनभास्करं
विरचितं शंभोकृपालंबनादेतत्पाठकृतां सदैव विदुषां तुष्टा
भवेद्भारती ॥६॥

इति श्रीमद्भवानीशंकरोपासक-लक्ष्मीनारायणपण्डित-
विरचितो हायनभास्करः समाप्तः ।

वैक्रमीय संवत् १९६७ माघशुक्लवसंतपंचमीके मत्स्यदेशांतर्गत जयपुरनामक नगरमें भगवान् भवानीशंकर और महाराजकी कृपासे इस हायनभास्कर ग्रंथको लक्ष्मीनारायण पण्डितने रचा इसका पाठ करनेवाले विद्वानोंपर भगवती शारदाम्बा सदा प्रसन्न होगी ॥६॥

टीकाकारप्रशस्तिः

श्रीमन्माधवसिंहभूपतिलकेनातीवसंरक्षिते
विख्याते जयपत्तने क्षितिसुरो श्रीरामचंद्रात्मजः ।
तेनेदं रचितं सतामतिमुदे दुर्गाप्रसादाभिधः ।
ग्रंथं हायनभास्करस्य विमलः टीकां प्रभानामिकाम् ॥१॥

इति श्रीमद्गुर्ज्जरगौडविप्रवंशोद्भवजयपुरवास्तव्यश्रीमद्राम-
चंद्रसूरिसूनुदुर्गाप्रसादविरचिता हायनभास्करग्रंथस्य
हिन्दीटीका समाप्ता ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मी वेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,
कल्याण-बम्बई.

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,
खेतवाडी-बम्बई.

मुद्रक व प्रकाशकः-

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष-"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,

कल्याण-बम्बई.